# चैतन्य लहरी

खंड : 12 अंक 1 व 2 2000

सर्वप्रथम आपको देखना चाहिए कि क्या आप शान्त है? क्या आपके हृदय में शान्ति है? आपके हृदय में यदि शान्ति नहीं है तो आप सहजयोगी नहीं है। यदि आप उत्तेजित हो जाते है और लोगों पर चिल्लाने लगते है तो इसका अर्थ ये है कि आप सहजयोगी नहीं है। आपका स्वभाव अत्यन्त शान्त होना आवश्यक है---- अत्यन्त महत्वपूर्ण।

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

इस अंक में


| | |
|---|---|
| सम्पादकीय | 1 |
| स्वागत समारोह | 3 |
| गुरुनानक जन्मदिवस 1999 | 6 |
| परम पूज्य श्री माताजी और डा0 तलवार के बीच हुई वार्तालाप का शेष भाग | 11 |
| एकादश रुद्र पूजा - 1984 | 17 |
| आदिशक्ति पूजा - 20.6.99 | 25 |
| गुरु पूजा - 1.8.99 | 32 |
| श्री कृष्ण पूजा-कबैला - 5-9-99 | 42 |



सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : वी जे नालगिरकर
162, मुनीरका विहार
नई दिल्ली-110067

# सम्पादकीय

विश्वभर के सहजयोगी नव-सहस्राब्दि के शुभ आरम्भ को बड़े जोश के साथ मना रहे हैं। 'नव' के साथ सदैव उत्साह जुड़ा होता है परन्तु इसका महत्व प्राय: आच्छादित हो जाता है क्योंकि अंधेरे में तो केवल परछाईयाँ ही दिखाई देती है और परछाईयाँ कभी सत्य नहीं होतीं। यद्यपि अधिकतर लोग सोचते हैं कि कुछ महान घटना घटित हो रही है, परन्तु वे नहीं जानते कि ये क्या है।

नई सहस्राब्दि की विशिष्टता ये है कि श्री आदिशक्ति अवतरित हुई हैं और साक्षात् हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही है। मानव चेतना में प्रवेश करके प्रेम की शक्ति ने संकेन्द्रित लहरियों के रूप में मानव जीवन के सभी पक्षों का विस्तार किया है। प्रेम की शक्ति की सहायता से पुनरुत्थान हुआ है और हमने सामूहिक चेतना का अनुभव किया है। इस अनुभव ने हमें 'पूर्णसत्य' के ज्ञान तक पहुँचाया है। सच्चे ज्ञान के प्रकाश में ये स्पष्ट हो गया है कि हमारे जीवन का लक्ष्य या उद्देश्य श्री आदिशक्ति के माध्यम बनकर उनके प्रेम को प्रतिबिम्बित करना है।

श्री आदिशक्ति ने हमें संकीर्ण व्यक्तिगत स्वार्थी मानव से असीम सामूहिक मानव में परिवर्तित कर दिया है। अपनी वृहत् दृष्टि से हम सामूहिक आदर्शों को देखकर सामूहिक हित में उनका उपयोग करने के योग्य हो जाते हैं। इसके साथ-साथ हममें कुटिल मनसूबों को देखने की भी योग्यता आ जाती है और हम समझते हैं कि किस प्रकार कार्य को करना है। परमेश्वरी माँ की कृपा से हम सभी अशुभ प्रयत्नों को दूर करके उन्हें प्रभावहीन कर देते हैं। दिव्य प्रेम की नवचेतना से हमारी शुद्ध इच्छा व्यक्तिगत और सामूहिक समस्याओं का हल खोजने में सक्षम हो जाती है क्योंकि हमारा ज्योतित चित्त उनमें प्रवेश कर जाता है। केवल इतना ही नहीं, हमने बार-बार अनुभव किया है कि परम-चैतन्य कदम-कदम पर हमारी सहायता के लिए आता है और पंचतत्वों को हमारी सहायता के लिए उपलब्ध करता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नई सहस्राब्दि के उदय के साथ विश्व स्वतन्त्र, अकेला या विलग न होकर अपनी सृष्टा की पूर्ण देख-रेख और सुरक्षा में स्थित है। इसमें घटित होने वाली सभी घटनाओं को श्री आदिशक्ति देख रही है और हमारी सारी गतिविधियों को वे जानती हैं।

पुरातन ग्रन्थों में वर्णन किया गया है कि 'देवी की दृष्टि मात्र यदि किसी पर पड़ जाए तो वह भी धन्य है, और आज तो विश्व पर उनकी महान कृपा वर्षा हो रही है। उनकी प्रेम की शक्ति से हमने बहुत से मरुस्थलों को लहलहाते

मरुउद्यानों में परिवर्तित होते देखा है। अत: हमने प्रेम एवं दिव्य विवेक की नई सहस्राब्दि में प्रवेश कर लिया है। ज्यों-ज्यों मानवीय चेतना का उत्थान उनके प्रेम सागर की ओर हो रहा है मानव घृणा, हिंसा एवं प्रतिशोध के तट को त्याग रहे हैं। नई सहस्राब्दि की प्रभात बेला में आकाश पर क्षमा, करुणा, आशा और आनन्द के सुन्दर रंगों का इन्द्रधनुष उभर आया है। ऋतुओं की सुगन्ध भी परिवर्तित हो गई है। 'निर्मल' ऋतु का आरम्भ हो चुका है। हमें आनन्द प्रदान करने के लिए यह मधुर शीतल, सुगन्ध अपने साथ लाई है।

'ओ देवी,

कृतज्ञता की अभिव्यक्ति आपके प्रति कैसे करें?

आपके चरण कमलो के प्रकाश ने दिया जन्म यशस्वी सहस्राब्दि को!

साड़ी के फ़ाल में छिपे

अपने चरण कमलों के निरन्तर दर्शन का

हमें वरदान दो।

सुन्दर श्री चरणों को सजाती हुई

अपनी स्वर्णिम पायल की मधुर झंकार के संगीत को,

सुनने का वरदान दो।

श्री चरण आपके, हृदय में पूजते रहें अपने जीवन की हर श्वास में।

# स्वागत समारोह

## परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (5.12.99)

सत्य को पाने वाले सभी सहजयोगियों को हमारा प्रणाम। आप लोग इतनी बड़ी संख्या में यहाँ उपस्थित हुए है ये देखकर मेरा वाकई में हृदय भर आया है और सोच-सोच के कि मेरे ही जीवन काल में इतने लोगों ने, इतने दूर-दूर के लोगों ने, सत्य को प्राप्त किया है। सत्य के बगैर मनुष्य का जीवन बिल्कुल व्यर्थ है, जैसे अन्धेरे में इन्सान टटोलता रहता है उसी तरह सत्य के बगैर मनुष्य भटक जाता है। उसमें उसका मै दोष नही मानती, दोष है उस अन्धेरे का जो उसे घेरे हुए है। जैसे कहा है आपको और सबको सहजयोग बढ़ाना चाहिए। ये मेरी भी बड़ी इच्छा है कि सहजयोग आप लोग बढ़ा सकते हैं और फैलना चाहिए। सबको ये सोचना चाहिए यह हमने पाया है हम भी दूसरों को दें और इसको बढ़ाएं। इससे सहजयोग बढ़ेगा ही लेकिन उससे एक शान्तिमय, सुन्दर सा ऐसा स्वर्ग इस संसार में आ जाएगा। यह आपके हाथ में है कि आप लोग इस कार्य को पूरी तरह से करें और हिन्दुस्तान में यह कार्य बहुत ज़ोरों में हो रहा है, उसका कारण ये है कि भारतवर्ष एक योग-भूमि है एक पुण्यभूमि है और पुण्यभूमि में इस तरह का कार्य होना था ही, लिखा ही था। विधि थी। किन्तु इतने जोरों में और इतना बढ़कर ये परिवार इतना परिपक्व होगा ऐसी कभी भी मुझे उम्मीद नहीं थी। लेकिन यह घटित हो रहा है और होगा भी। इसका आनन्द जो आप उठा रहे है वो दूसरों को भी देना चाहिए।

हिन्दुस्तान तो है ही मेरा देश और यहाँ आने में जो एक विशेष आनन्द होता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता और जब मै आप लोगों को देखती हूँ, एयरपोर्ट पर, तब मुझे लगता है कि न जाने कितने हृदयों में ये आनन्द आड़ोलित हो रहा है और कितने ही लोग इस आनन्द से प्लावित हो रहे हैं। इसी से हमारे बच्चों की भी रक्षा होगी, और हमारे युवा लोगों की भी रक्षा होगी। इतना ही नहीं, लेकिन हमारे देश में सुबद्धता और असली माने में स्वराज्य आएगा। स्व: का मतलब है आत्मा और आत्मा का राज्य आना ही स्वराज्य है। स्वतन्त्र का मतलब है फिर वही आत्मा का तन्त्र माने आत्मा की एक रीत। ये दोनों आनी चाहिए और वो आ गई है। आप लोगों ने इसे स्वीकार किया है अपने जीवन में उतारा है। लेकिन अब दूसरों को भी उबारने का, उनके भी उद्धार का यही समय है इसको करना चाहिए। अभी मैंने बहुत सी बातें देखी तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मिलेनियम का असर कितने ज़ोरों में आ रहा है। जैसे कि हमारे बहुत से सहजयोगी विदेश से भी आए थे और जो गए थे उड़ीसा, वहाँ लोगों को सहजयोग सिखाया और वहाँ उन्होंने नौ सेन्टर स्थापित किये। जब साइक्लॉन (Cyclone) आया, उड़ीसा मे, उसका कारण है, क्योंकि

वहाँ बहुत अनाप शनाप बातें हो रही थी, गलत बातें हो रही थी। तो एक भी, एक भी सहजयोगी को कुछ क्षति नहीं हुई। उनके मकान नहीं गिरे, उनको कुछ नहीं हुआ। इसी प्रकार टर्की में हालांकि वो लोग पहले मुसलमान थे और अब असली मुसलमान हो गए और जब ये सहजयोग में आ गए, करीबन दो हज़ार से ऊपर लोग वहाँ सहजयोग में है। तो वहाँ भी दो बार बहुत बुरी तरह से भूकम्प आया लेकिन एक भी सहजयोगी उस भूकम्प में ज़रा सा भी दुखी नहीं हुआ। किसी के रिश्तेदार तक नहीं मरे, वो लोग तो बच ही गए। ऐसी अनेक वारदात हुई इटली में भी और हर जगह मै देखती हूँ कि सहजयोगी एकदम बिल्कुल पूरी तरह से जैसे संरक्षित है और इस संरक्षण में आप लोग पनप रहे हैं। इसका मतलब है जो हम कहते है कि ये Last Judgement है वो शुरु हो गया है और वो चल रहा है बड़ें ज़ोरों से। आप लोग सब ध्यान करते ही है ओर आपने सहज में बहुत उन्नति कर ली, लेकिन ये सब पाने पर दूसरों को भी देने की इच्छा होनी चाहिए। ये इच्छा होगी ज़रूर लेकिन किसी न किसी वजह से इसकी इच्छा पूर्ति नहीं होती। उसे आप लोगों को पूरी तरह से जोश से करना चाहिए। संसार के कार्य तो चलते ही रहते है घरेलू बातें चलती ही रहती हैं और उसमें से निकलके और लोगों को जागरण देना उनको संवारना उनका उद्धार करना ये आपका एक परम कर्तव्य है। और इसकी दारोमदार आप ही के ऊपर में है। आप ही लोग इसे कर सकते है और बहुत से कर भी रहे है लेकिन मेरे विचार से इससे भी ज्यादा सोच-विचार करके कि हमारा जो सुख है, हमारा जो आनन्द है, हमने जिसे प्राप्त किया वो और भी प्राप्त करें इस विचार से गर आप उधर थोड़ी सी दृष्टि लगाएं तो बहुत कुछ हो सकता है इस भारत वर्ष में। और मै तो सोचती हूँ कि ये कार्य कोई कठिन नहीं क्योंकि इसमें कोई झगड़ा नहीं, कोई आफ़त नहीं कोई दवा नहीं, कोई दारु नहीं, कुछ नहीं, सिर्फ लोगों की कुण्डलिनी जागृत करना और उसकी शक्ति आपके अन्दर है उसको इस्तेमाल करना है। जब आपके अन्दर शक्ति है तो आप उसको इस्तेमाल नहीं करोगे तो उसका क्या फायदा? उस शक्ति को आप सब इस्तेमाल करें और निश्चय करें कि हर आदमी, हर सहजयोगी कम से कम सौ आदमियों को पार करे, सबसे बात करें और उसमें शर्माने की कोई बात नहीं है, घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि हम सत्य पर खड़े है। और आजकल जो तरह-तरह के गुरु घण्टाल निकले हुए है उनका यही इलाज है कि हम खुले आम ये बातें करें, सबसे बात करें और उनसे कहें कि इस चक्कर से बचो नहीं तो वो लोग भी खत्म हो जाएंगे। ये हमारा कर्तव्य है कि जैसे संसार की नाव डूब रही है और उसको बचाने वाले आप ही है। आपको किसी तरह से भी यही कोशिश करनी चाहिए कि हम कितने लोगों को पार कराएं। ये आनन्द अपने ही हृदय में कभी समा नहीं सकता, गर समा सकता तो हम क्यों अपना घर द्वार छोड़ करके और बाहर घूमते और लोगों को पार कराते। ये ऐसी स्थिति है कि उसमें लगता है कि दूसरों के साथ भी मिल-जुल करके इसका उपयोग लें। और इस

स्थिति पर गर आप है तो उसका पूरा इस्तेमाल करना चाहिए और उस ओर अग्रसर होना चाहिए, उस तरफ बढ़ना चाहिए। और आशा है कि अगले वर्ष जब हम यहाँ फिर से हिन्दुस्तान आएं तो इससे कई गुना ज्यादा लोग सहजयोग में उतरे हुए नज़र आए। आपने सत्कार किया है वो मै क्या कहूँ, कोई ज़रूरत नही थी पर आपकी इच्छा है तो मै मान लेती हूँ भई चलो सत्कार करो। पर वो तो मुझे उसी दिन दिखाई दिया जब मै यहाँ पर एयरपोर्ट पर आई थी और किस तरह से लोग बिल्कुल, प्यार से बिल्कुल दीवाने हो गए। तो ये प्यार की महिमा है और इस प्यार को बाँटना और देना ये भी बड़ी भारी बात है। और इस जन्म में गर ये होगा तो न जाने कितने ही पुण्यों का फल मिल जाएगा। मेरे अनन्त आशीर्वाद है आप सबको।

# गुरुनानक जन्मदिवस 1999

## नोएडा निवास

सो आज गुरुनानक साहब का जन्म दिन है और सारे संसार में मनाया जा रहा है और आश्चर्य की बात है कि इतना हिन्दुस्तान में मैंने नहीं देखा। First time इतने पेपर में दिया और सब कुछ किया है। और उन्होंने सिर्फ सहज की बात की है। सहज पे ही बोलते रहे है और हमेशा कहा ये सब जो है बाहर के आडंबर है। धर्म के बारे में कहा कि उपवास करना, तीर्थ यात्र करना और इधर जाना उधर जाना ये सब धर्म के आडंबर है। अब और आपको सिर्फ अपने अन्दर जो है उसको खोजना है, अपने अन्दर जो है उसको स्थित करना है। बार-बार यही बात कहते रहे उन्होंने कोई दूसरी बात कही ही नहीं। मतलब यहाँ तक है कि कोई भी Ritual की बात नहीं करी उन्होंने और उसके बाद जब गुरु तेग बहादुर जी आए तो उन्होंने कहा कि आज ही शहीदी दिवस, आज नही कल, कल। तो वो भी उसी विचार के थे। पर जो आखिरी गुरु थे इनके उन गुरु ने क्योंकि युद्ध हो रहा था इसलिए सब बनाया कि आप कड़ा पहनिए, बाल रखिए ये सब जो चीजें बनाई। ये सब उन्होंने बनाई पर गुरुनानक साहब ने तो सिर्फ (spirit) आत्मा की बात करी। उन्होंने कहा बाकी सब चीजे बेकार है। बिल्कुल साफ-साफ कहा है कोई अब पढ़ता ही नहीं उसे, करें क्या? वो तो एक उंगली रखेंगे ऐसे पढ़ेंगे यहाँ बताएंगे फिर वहाँ तक पहुँच गए, फिर वो उंगली रखेंगे। तो इस तरह से कोई पढ़ सकता है। गर उसको ठीक से पढ़ा जाए और उसको मनन किया जाए तो ये जो शब्द जाल है ये खत्म हो जाए पर लोग सब उसी में फँसे हुए है और इसी में सिक्ख लोगों का तो देखिए क्या हाल है! है ही नहीं, अन्दर की खोज तो है ही नहीं। उनके अन्दर जो होना चाहिए। अन्दर की खोज ही नहीं है तो कहाँ से आप सिक्ख धर्म को follow करेंगे। और यही सीख है और इसको वो कहते है सिक्खी। अरे ये आपको हमने लिख के दिया है ये आप पढ़िए- और जितने बड़े-बड़े उस ज़माने में हो गए थे पहले भी और बाद में उभरे। बड़े-बड़े सन्त हुए, जानते ही थे कौन सन्त है कौन असन्त है। उनकी सबकी कविताएँ और ये सब उन्होंने अपने ग्रन्थ साहिब में लिखी। इसलिए ग्रन्थ साहब जी पूज्यनीय है। क्योंकि ऐसे लोग जो बिल्कुल जाने हुए थे, उस वक्त में माने हुए थे कि ये बड़े भारी गुरु है और इन्होंने बड़ा कार्य किया और इतने Spiritual है, उनको सबको सन्तुलित कर दिया उन्होंने और उसमें रख लिया। ये ही सहजयोग में हम करते है कि भई हम किसी एक विशेष को नही मानते है सबका हम आदर करते है। सबका समागम करते है। ये उन्होंने उस वक्त किया पर उस वक्त जब

वो सब शब्दों में खत्म हो गया। उससे आगे कोई गया ही नहीं। तभी, कबीर ने लिखा है कि पढ़ि-पढ़ि पण्डित मूर्ख भए। वही बात है कि सब मूर्खों को ही तैयार किया उन्होंने। अब न तो कोई लड़ाई हो रही है न ही कुछ हो रहा है तो वे पगड़ी रखने की कोई ज़रूरत नहीं और रखने की ज़रूरत नहीं और पता नहीं और क्या क्या होता है उनका कंघी रखने की ज़रूरत नहीं सब चीज़े वो उसी तरह से कर रहे हैं और शराब पीते हैं और शराब में उनको कोई objection नहीं है। शराब को बहुत मना किया उन्होंने । जो आदमी अपनी चेतना की बात करेगा वो शराब को Support ही नहीं कर सकता। उधर शराब पीते है इधर ये सब करने का, इसमें बड़े Particular है कि पगड़ी लगाएंगे और ये करेंगे और वो करेंगे एक जैसे बनाना चाहते है। और उस clane (कबीला) में रहना चाहते है और इसलिए ये सब करने से अन्दर की बात जो कही है वो कम होने लगी। सो इसी तरह से चलता रहा उनका पता नहीं कैसे। They have taken to this kind of ritualism और बिल्कुल बाहर आ गए, बाह्य में आ गए। बाह्य से ये सब कुछ उनको समझ में आता है। अब इन लोगों को मोड़ना अपनी तरफ कोई बिल्कुल कठिन काम तो बिल्कुल नहीं होना चाहिए क्योंकि उन्होंने वही कहा है जो हम कर रहे है। उन्होंने किया नहीं है फ़र्क ये है हमने किया है। उन्होंने कहा है सहज समाधी लागो कैसे? सोचे कहाँ है कुण्डलिनी इससे ऊपर। ये भी कह दिया और कौन करेगा वो तो Realization तो मेरे ख्याल से दिया ही नहीं उन्होंने किसी को जाकर। कहते है उनके दो शिष्य थे। उन दो शिष्यों को उन्होंने Realization दिया। अब एक आदमी गर दो शिष्यों को दें तो उसको क्या effect आ सकता है। तो लोगों ने जो उनका बाह्य स्वरूप था उसको लेकर के बस शुरु कर दिया। बड़े-बड़े उसके बनाए, आप तो देखते ही है कितने सारे मन्दिर बनाए, क्या-क्या बनाया, सब कुछ किया। उससे कोई फायदा नहीं पर मनुष्य कम बनाए और जो बाकी बने है वो सरदार जी है, अब क्या बताएं। इनको किस तरह से समझाया जाए कि- पर अब सहज में आने लग गए है ऐसा नहीं, मै देखती हूँ कम से कम आठ दस सहजयोगी आते ही है। जबकि ये सिक्ख पगड़ी वगड़ी लगाए रहते है कुछ बगैर पगड़ी के आते हों तो मुझे पता नहीं और एक नाम धारी सिक्ख है। नाम धारी हमें मालूम है। लोग ज्यादातर वहाँ पर रहें बैकाक, तो वहाँ काफी लोग आए थे पचास-साठ नाम धारी, वो सफेद पगड़ी पहनते है तो उनका तो पता नहीं क्या है उनकी विशेषता, मुझे नहीं मालूम। लेकिन वो follow करते है जो उन्होंने कहा हुआ है। इसी तरह से घर में diversion होते जाते है पता नहीं कहाँ जाकर पहुँचे हुए है? आपस में लड़ रहे है फायदा क्या? और उन्होंने तो ये कहा है कि मै मुसलमानों का पीर हूँ, साहब और इनका गुरु हूँ हिन्दुओं का और उनका पीर हूँ। तो किसी को तो समझ में आने वाली बात नहीं है। जब तक आप पार नहीं होते आपके समझ में नहीं आएगा और यही

बात है, यही होना जरूरी था पर उनका preparation था हमारे लिए। उन लोगों ने सबने आपको prepare किया और अन्त में हमारा काम ये कि उन्होंने जो कहा वो कर दिखाएं, करके दिखा दें। लेकिन ये दशा सत्य हुई है। समझ में नहीं आता कि कितने लोग इसी तरह से खो गए है कहाँ से कहाँ चले गए है। हमारे यहाँ ज्ञानदेव की मैं बात बता रही थी कि ज्ञानदेव कितने बड़े हो गए और वो नाथपन्थी थे और उन्होंने कुण्डलिनी का लिखा भी था परन्तु ज्ञानदेव के जो शिष्य हुए वो अपने को वारकरी कहलाते हैं और एक तमाशा है वो इतनी बड़ी-बड़ी दो झाँजें हाथ में लेते थे, दोनों मिलाके एक किलो की होगी उसको कूटते कूटते जाते पण्डरी नाथ, पण्डरपुर। और वो कपड़े उसको लखतर कहते है माने जूट के कपड़े पहने के जाते हैं फटे हुए यानि बड़े sacrificing और एक महीना कूटते-कूटते वहाँ पहुँचते है। और रास्ते में तम्बाकू खाते रहते है ये वारकरी लोग। और फिर उन्होंने उसमें ऐसा सम्प्रदाय बना दिया। उस सम्प्रदाय में क्या विशेषता है कि जैसे वो एक पालकी निकालते है, ज्ञानदेव की पालकी, जिनके पास कि जूते नहीं थे। उनकी पादुका उसमें रखते हैं और वो लेकर के गाँव गाँव जाते है। और जिस गाँव जाते हैं वहाँ पालकी आई तो वो सब वहाँ खाना खाते है। फिर दूसरे गाँव गए फिर पालकी आई वहाँ खाना खाते है। Means भीख माँगने का नया तरीका वहाँ बना हुआ है। तो इस तरह की चीज़े और तीसरा ये कि उनका वहाँ जन्म हुआ था जहाँ जहाँ ज्ञानदेव जी हुए थे। पूना के पास बाद में हो गए थे आगे निवासे में हुआ उनका पर यहाँ पैदा हुए । तो वहाँ औरते एक पूरी कूण्डी जिसमें कि वो तुलसी लगी हुई है अच्छा बिल्कुल मिट्टी से भरी हुई है कम से कम तीन चार सेर से कम नहीं है उसको सिरपर लेकर के आनन्दी तक पैदल जाती तो ये, आँखो देखा हाल है समझ में नहीं आता कि क्या कर रहें है और बहुत से लोगों ने उनके नाम पर ही इतना पैसा बनाया है। इतना इतना कुछ समझ में नहीं आता कैसे लोग इस चीज़ को मानते हैं! कि किसी भी आदमी का नाम लेलो और पैसे बनाओ। और इसी तरह से उनका सारा जो कार्य था खत्म हो गया। इतना ही नहीं एक साहब हैं ज्ञानदेव वे ये देते है बड़ा भारी लैक्चर वैक्चर, बहुत पैसा बनाते हैं सिर्फ लैक्चर देते हैं और फिर मन से जो चाहे बोलते रहना उनके बारे में, लोग अपना सुनते रहते है इस तरह की अन्ध श्रद्धा भरी हुई है और इसी तरह से गुरुनानक साहब के साथ भी होता है मैं देखती हूँ कि कोई जानता ही नहीं गुरु नानक साहब ने क्या कहा, क्या नहीं कहा। और यहाँ तक की चण्डीगढ़ बनाया हुआ है, चण्डी की बात करी है हमारे आने की बात करी है सब कुछ वर्णन किया हुआ है कोई नहीं सुनता, कोई देखता भी नहीं। तो इसी तरह हरेक का हो जाता है पर अब जिसको पार होना है पार हो गया उनका ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि आपको तो सत्य मिल गया है तो अब आप झूठ नहीं स्वीकार्य कर सकते और इसमें से कोई झूठ

निकले भी तो वो खत्म हो जाता है इतने लोग पार हो गए है सारे संसार में की अब कोई झूठ नहीं फैल सकता। हमने जो कहा वो Taped है Recorded है, सब कुछ है तो कोई उसको बदल नही सकता। इसीलिए मैंने किताब भेजी थी क्योंकि Tape को तो सुनना पड़ता है, परन्तु किताब है साहब पढ़े जा रहे है कुछ समझ में नही आ रहा इससे बेहतर है मैंने कहा किताब कम लिखों ज्यादा जो है वो सुनने को कहो। सुन-सुन के ही खोपड़ी में जाएगा। नहीं तो पढ़ने में बस मनोरंजन हो रहा है, पढ़ रहे है। इससे क्या फायदा है? और जब आप देखते है क्या सहजयोग का हाल होने वाला है, ये कुछ समझ में नहीं आता कि अब तो ये बिगड़ सकते है अब एक हद तक पहुँच गए है तो अब नहीं बिगड़ सकते ऐसा मेरा विश्वास है तो गलत काम नहीं करना पड़ेगा यही एक इनकी दी हुई सीख से सीखना है कि गुरुनानक क्या कह गए। किताब ये किताब लिख गए। गुरुवाणी पढ़ी है तो सारे जब ये ही कहा कुछ अपने को जानो अपने को पहचानों और लोग कर क्या रहे है? लेकिन सहज में ऐसा होगा नही। क्योंकि अब तो सबको पटा लिया मैंने, अब तो नहीं बदल सकते। फिर क्या है तो भी कुछ नहीं हो सकता जो हो गया सो हो गया और कितना अपमान है और कितनी उन्होंने तकलीफें झेली कितनी? परन्तु जागृति नहीं हुई, जागृति नही हुई, उससे अनुभूति नहीं हुई। तो उस पर आप जो भी करना चाहो, जैसे चर्च है सिर्फ आप किसी का नाम लीजिए उस किताब पर ही तो कुछ बदल होने वाला है। जागृति पर यही उनसे एक Lesson सबको लेना चाहिए कि हम उनकी तरह से गलत मतलब नहीं लें या हम कोई गलत धारणा न करें। ये बहुत ज़रूरी है। हम जो है हम सहजयोगी है इतना विशद् रूप से सहजयोग समझते है गहन समझते है कि अब इससे कोई और चीज़ निकालने की ज़रूरत नहीं। अभी भी एक आध तो होते है, ये ऐसा है तो ये करो, वो करो सब बेकार की बाते है। बिल्कुल क्या कहना चाहिए उसको कि एक तरह का झूठा ही गँवा रहे, सच्चाई कुछ नहीं कि आप उसको इधर पाने के लिए खोजते रहो। ऐसा कुछ, ऐसा हमने कभी कहा ही नहीं। जो चीज़ कही ही नहीं वो कर रहे है। पर अब ऐसा है कि वो कान से सुनेंगे तो पता चलेगा। वो कान से तो जाएगा न सिर में जहाँ पढ़ने से नही जाता। तो समझेंगे ये नही कहा, माँ ने जो नही कहा। नहीं कहा अब क्यों करते हो ऐसे? पर वो पुराने संस्कारों की वजह से। उससे भी, होता है जो पुराने संस्कार है हिन्दुस्तान के, हमारा जन्म इसमें हुआ तो हम ऐसे चलेंगे। ये जब तक नहीं छूटता है। तब तक सहज का असली रूप निकलता नहीं, और आपको तो special बनाया हमने, special लोग हैं आप। special धर्म आप जानते है। सब कुछ आप जानते है अपने बारे में जानते है, दूसरों के बारे में जानते हैं। जागृति आप कर सकते है सब बात समझ सकते है तो अब तो सम्पूर्ण हो गए। अब इसके बाद बिगड़ने की क्या बात है, बिगड़ ही नहीं सकते। तो इस पर मुझे आज यही विचार आया कि गुरुनानक

साहब ने कितनी मेहनत के साथ सहन किया, पत्नी भी उनकी ठीक नही थी। बहुत परेशान रहे और कर के जो उन्होंने बनाया तो उसका क्या हाल है आज? ऐसा ही ईसामसीह का, ऐसा ही सबका हाल है। मोहम्मद साहब का यही हाल है सबसे ज्यादा गुरुनानक साहब का है। क्योंकि वो सबसे last आए थे और बहुत समझाया, सब कुछ किया। उसके वाद साईनाथ आए साईनाथ कहने लगे, कोई ज़रूरत नही। सब बेकार है, साफ कह दिया। आपने कुछ चीज़ शुरु कर दी तो सब लोग खराब हो जाएंगे क्योंकि जागृति नही हुई। जागृति के बाद बात और है, सब लोग एक हो जाते है सब समझदार हो जाते है। उसके बगैर बहुत मुश्किल काम है। तो उन्होंने किया ही नही, ऐसे लोगों को दौड़ाए नही, कुछ नही, उनके शिष्य हो गए और हमने भी organize नहीं किया। हमारा कोई organization नही है कुछ नही। पर पार होने पर automatic organize हो जाते है। जैसे ये शरीर है इसके सारे अंग-प्रत्यंग organized है अपने आप। उसी तरह से कोई ऐसा organization नही है, कुछ नही है सब ऐसे ही चल रहा है। सबको आपको अनन्त आशीर्वाद है। और ये ध्यान रखना है कि हमने जो पाया है उसको विकृत नही करना है। इससे बढ़ के और पाप कोई नही इसको विकृत नही करना, किसी भी वजह से विकृति नही आने देनी।

अनन्त आशीर्वाद।

# परम पूज्य श्री माताजी और डा0 तलवार के बीच हुई वार्तालाप का शेष भाग

## भौतिक चिकित्सा:

चैतन्य लहरियाँ जब बहती है तो शरीर की माँस पेशियों को आराम प्रदान करती है। तनावों के कारण माँसपेशियों में ऐंठन आ जाती है। उदाहरण के रूप में बाई विशुद्धि या किसी अन्य चक्र में तनाव से रीढ़ की हड्डी में ऐंठन शुरु हो जाती है। जब आप अपने चक्र मुझे समर्पित करते है तब ये सुखद अवस्था में आ जाती है और तब चैतन्य लहरियाँ देकर आप इन्हें ठीक कर सकते है। ये चैतन्य लहरियाँ आप दूसरों को भी दे सकते है। दूसरे व्यक्ति को छूने की कोई आवश्यकता नही है। मंत्र का उपयोग करते हुए दूर से हाथ चलाकर दूसरे व्यक्ति को चैतन्य लहरियाँ दें।

बाई ओर की बीमारियों (मनोदैहिक रोग) में आप सामूहिक अवचेतना (collection subconscious) में चले जाते है जहाँ प्रोटीन 52 विषाणु एकत्र कर लेते हैं। इनके कारण कई बार ऐसी स्थिति हो जाती है कि व्यक्ति लाइलाज हो जाता है। जिन लोगों के जिगर खराब है या जिन्होंने जिगर का दुरुपयोग किया है उन्हें ज्वर आ सकता है। गर्म जिगर को बर्फ रखकर ठीक किया जा सकता है। मलेरिया ज्वर भी दाई और का रोग है। बैक्टीरिया द्वारा हुए ज्वर बाई ओर का रोग है। ये विशेष रूप से फफूंद वाले पदार्थों को खाने से होते हैं जैसे खुम्भें (mushrooms), पुराना पनीर आदि। मधुमेह बाई ओर की बाधा से प्रभावित दाई ओर की प्रतिक्रिया के कारण होता है। शरीर का दायां भाग संवेदनशील होता है। जब आप बहुत अधिक सोचते है अपनी आदतों में फँसे रहते है तो आपके अन्दर भय पैदा होता है जो आपको अधिक दुर्बल कर देता है। परिश्रमी व्यक्ति जब बहुत अधिक सोचता है तो उसकी चर्बी के कण मस्तिष्क को शक्ति पहुँचाने के लिए उपयोग हो जाते है। स्वाधिष्ठान इस कार्य के लिए गतिशील हो उठता है और इस व्यस्तता के कारण बाई ओर उपेक्षित हो जाता है। इसकी शक्तियाँ कम हो जाने के कारण यह मनोदैहिक रोगों के प्रति भेध हो जाता है। इस स्थिति में यदि आप में कोई भय आ जाए या दोष भावना आ जाए तो मधुमेह हो सकता है। इसको ठीक करने के लिए अलि का मन्त्र लाभकारी है। स्वाधिष्ठान और बाई नाभि चक्र इसके स्रोत है। पत्नी के भय के कारण या उसके लिए या परिवार के किसी अन्य सदस्य के लिए चिन्ता करने से बाई नाभि प्रभावित हो जाती है। इस स्थिति में मधुमेह हो सकता है। अपने अगन्य चक्र को साफ करके इस ठीक करें। अधिक न सोचें, निर्विचार चेतना में बने रहें। बाई ओर को उठाकर दाई ओर को डालें। अधिक शक्कर

निकालने के कार्य को सन्तुलित करने के लिए नमक का उपयोग बढ़ा दें क्योंकि नमक में स्वच्छता कारक जल होता है। दाई नाभि और स्वाधिष्ठान पर बर्फ रखें और उपयुक्त परीक्षण के पश्चात् शक्कर का उपयोग बन्द कर दें।

## हृदय रोग

### अत्यधिक गतिशील और शिथिल हृदय

आक्रामक लोगों में अत्यधिक गतिशील हृदय होता है। ऐसे हालत में हृदयाघात हो सकता है। बहुत छोटी आयु में भी ऐसा हो सकता है। चित्त का बहुत अधिक बाहर होना इसका कारण है। अत्यधिक भौतिक दृष्टिकोण होने के कारण आत्मा की ओर उनका चित्त नही होता और अन्तत: आत्मा उन्हें त्याग देती है। भविष्य की और परिवार की बहुत अधिक चिन्ता के कारण भी व्यक्ति आवांछित रूप से गतिशील हो उठता है जिसके कारण हृदय को अत्यधिक परिश्रम करके रक्त संचार करना पड़ता है और यह पक जाता है। बहुत अधिक मन्त्र आदि जपने वाले, तम्बाकू, सिगरेट पीने वाले लोग पहले अपनी बाई विशुद्धि को खराब कर लेते है। जिसके कारण हृदय को रक्त संचार करने में कठिनाई होती है और हृदय थक जाता है। बाई विशुद्धि के कारण शिथिल हृदय हृदय शूल (Angina) का कारण हो सकता है। हृदयाघात दो तरह के हो सकते है। पहली तरह की समस्या को पेट और हृदय की दाई और बर्फ रखकर ठीक किया जा सकता है। इसके लिए बाएं को उठाकर दाएं पर भी डाला जा सकता है। पानी पैर क्रिया लाभकारी है। दाई ओर की समस्या के लिए अग्नितत्व (Candle Treatment) नहीं करना चाहिए, बत्ती बुझाकर सोना चाहिए और अधिकतर घर में रहकर पूरा आराम करना चाहिए। दायाँ हाथ बाएँ हृदय पर रखकर कहना चाहिए, ''श्री माताजी मै आत्मा हूँ, कृपा करके मुझे क्षमा कर दें। शिथिल हृदय की समस्याओं में रोगी कह सकता है कि ''श्री माताजी आप ही मेरी बीज मन्त्र है, आप ही मन्त्रिका हैं'' तथा ''मै निर्दोष हूँ''। ओर ''श्री माताजी मै सबको क्षमा करता हूँ। ''बाई ओर को शुद्ध करने के लिए अग्नि तत्व (Candle Treatment) का उपयोग करें।

## अस्थमा (Asthama)

अस्थमा रोग प्राय: बाई ओर का मनोदैहिक रोग है। कभी-कभी यह दाई ओर के खुष्क मिज़ाज और दूसरों पर रौब झाड़ने वाले लोगों को भी हो जाता है। उदावरण (peritonium) बहुत अधिक खुष्क हो जाता है। अस्थमा प्राय: दाएं हृदय की समस्या के कारण होता है। जिनके पिता की मृत्यु हो गई हो, जो अच्छे पिता न हों या जो अपने बच्चों को परेशान करते हों तथा जो अपने जीवन से सन्तुष्ट न हों, ऐसे लोगों को अस्थमा रोग हो सकता है। दाई ओर के लोग यदि वसा (fat) का अधिक उपयोग करें तो हानिकर है क्योंकि जम जाने के कारण यह प्रवाहित नहीं हो पाता। पतले लोग चिकनाई आदि का उपयोग कर सकते है परन्तु मोटे लोगों को घी तेल केवल अपने नाक और कान में ही डालने चाहिए। सिर की मालिश मोटे लोगों के लिए हितकर है।

## आर्टीकेरिया (Articaria)

आर्टीकेरिया रोग भी मनोदैहिक है। शिथिल जिगर के कारण इस रोग का प्रकोप हो सकता है।

**उपचार:**- गेरू का उपयोग करें। गेरू को पत्थर पर रगड़कर तनिक सी शहद में मिलाकर बच्चों को दें तथा बड़े भी इस रोग में गेरू का उपयोग करें। वृद्ध लोगों के लिए भी ये लाभकारी है क्योंकि इसमें धुलनशील कैल्शियम है। प्रभावित हिस्से पर इसे लगाकर किसी काले कपड़े से ढक दें। बाई नाभि की खराबियों के कारण ये रोग होता है। जिगर जब शिथिल होता है तो नाभि भी शिथिल हो जाती है।

व्यक्ति अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर पाता। यह बाई नाभि द्वारा प्रभावित शिथिल जिगर होता है।

बाई ओर को ठीक करना ही इसका उपचार है। शरीर को काले कम्बल या कपड़े से ढ़ककर इसे गर्मी दी जा सकती है क्योंकि यह एक प्रकार की एलर्जी है। एकदम गर्म के उपयोग के बाद एक दम ठण्डे का उपयोग इसका कारण है। चाय-काफी पीने के तुरन्त पश्चात् ठण्डा पानी पीना भी इसका कारण है। इस अचानक परिवर्तन को हमारी प्रणाली सहन नहीं कर सकती। बाई नाभि के क्षेत्र में ही हमारा प्लीहा (तिल्ली) भी है। प्लीहा गतिमापक और व्यवस्थापक भी है। अचानक परिवर्तन के कारण यह व्यवस्था अगर ठीक से न हो तो यह समस्या का कारण बनती है। अत: प्लीहा को रक्त कोषाणु (R.B.C.) घटाने या बढ़ाने के लिए उद्यत रहना पड़ता है। परन्तु अचानक किए गए परिवर्तन के कारण प्लीहा पगला जाता है। एक दम उत्तेजित हो जाने वाले लोगों में रक्त कैंसर रोग का यह मुख्य कारण है।

बायाँ आज्ञा चक्र गतिशील होगा तो आप शिथिल हो जाएंगे और दाई आज्ञा गतिशील होने पर आप अत्यन्त आक्रामक (Over Active) हो उठते हैं। शरीर में रसायनों का सन्तुलन आज्ञा चक्र से आता है। इसलिए आपको सदैव निर्विचारिता में रहना चाहिए। तामसी प्रवृत्ति (बाई ओर) के लोग स्वयं को कष्ट देते है और आक्रामक स्वभाव के (दाई ओर) के अन्य लोगों को कष्ट देते है। अत: बाई ओर के लोगों के शरीर में दर्द होता है और वे कष्ट उठाते हैं। दूसरों को कष्ट पहुँचाने वाले, दाई ओर के लोगों को इस बात का पता भी नहीं होता। ऐसे लोगों को जिगर का पीलिया रोग (Cirrohsis of the lever) या चक्षु रोग हो सकते हैं।

'भक्ति' बाएं ओर का रोग है; श्रद्धा मध्य का। जब तक दर्दे शुरु न हो जाएं बाई ओर बहुत सुहावनी लगती है। परन्तु बाद में आप भटकने लगते हैं। कुछ भक्त लोगों के साथ ऐसा हो रहा है।

**जब मैं बोलती हूँ तो मेरा हर शब्द मन्त्र है। मैं जब बोलना आरम्भ करती हूँ तो लोग ठीक होने लगते हैं।** अब सभी प्रकार के लोग आ रहे हैं। कुछ बहुत तेजी से उन्नत हो रहे है। उन्होंने मुझे देवी समझ कर एक तरफ बिठा दिया है कि मुझ तक नहीं पहुँचा जा

सकता। अब आपमें से कोई सहजयोगी जब खड़ा हो जाएगा तो उसे देखकर लोग सहज में आएंगे। कुछ लोगों का सहज कार्य के लिए आगे आना बहुत आवश्यक है। बहुत से लोगों ने सहजयोग को व्यक्तिगत बना लिया है। वे जानना चाहते है कि उनके परिवार पर, दूसरे लोगों पर, बम्बई के लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। सहजयोगी अत्यन्त ईमानदार, करुणामय, कुशल, सुस्वभाव और कम क्रोध वाले हैं। उत्थान की इस प्रक्रिया में उनके चरित्र ने एक नया आयाम अपना लिया है। आप सभी दूसरों की चिन्ता किए बिना इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करें। **परिस्थिति के समय अपनी स्थिति की परीक्षा होती है। अत: स्थिति पूर्णत: विवेकमय होनी चाहिए।**

चक्रों पर देवी देवता विराजमान है। कुण्डलिनी जब जागृत होती है तो इन्हें भी जागृत करती है और जागृत होकर देवी देवता उत्थान को कार्यान्वित करते हैं। अपने कार्य को भलीभांति जानते है और उसे अंजाम देते हैं। उत्थान प्रक्रिया के समय ये देवी देवता हमारे अन्दर स्थापित हुए। अपने स्थान पर रहते हुए ये कार्य करते हैं। एक छोटे से बीज का उदाहरण लें। यह स्थूल होता है। परन्तु इसमें बड़े-बड़े वृक्ष बनाने की संभावना निहित होती है। यह संभावना अत्यन्त सूक्ष्म होती है। यद्यपि यह स्थूल दिखाई पड़ती है। **सुगन्ध पृथ्वी माँ का गुण है** अत: जब कुण्डलिनी जागृत होती है तो अपने गुण (causal) को छूती है और कभी कभी व्यक्ति में से सुगन्ध महकने लगती है। आत्म-साक्षात्कार का कारण सम्बन्ध (causal) शुद्ध इच्छा है। **मनुष्य में तीन सम्भावनाएँ होती है स्थूल, सूक्ष्म और कारणात्मक।** आत्म साक्षात्कार का कारणात्मक सम्बन्ध अर्थात् शुद्ध इच्छा सूक्ष्म और स्थूल शरीर को ज्योतिर्मय करता है। जैसे बीज को यदि आप पृथ्वी माँ में डालें तो पृथ्वी माँ इसे जीवन्त करके संभावना शक्ति प्रदान करती है। इसी प्रकार कुण्डलिनी भी हमारे अन्दर पृथ्वी माँ है जो व्यक्ति के अन्दर छिपे बीज को सशक्त आयाम प्रदान करती है। सभी चक्र अपने गुण के अनुसार कार्य करते हैं, लेकिन समस्या ये है कि हम स्थूल स्तर पर भी इन चीज़ों को नहीं समझते। हम एक अणु को ही लें। अणु के अन्दर प्रोटोन, न्यूट्रोन और मोसोट्रोन होते है। हिलियम गैस की तरह से यदि आप इस अणु को ठण्डा करें तो प्रोटोन, न्यूट्रोन और मोसोटोन सामूहिक हो जाते है। इस प्रकार स्थूलतम चीज़ों में भी ये संभावना मौजूद है और वैज्ञानिक रूप से इसे प्रमाणित किया जा सकता है। मानव की बात जब हम करते है तो जीवन्त क्रिया की बात हम करते है। स्थूल स्तर पर मानव की ही अभिव्यक्ति सबसे अधिक हुई है अब आन्तरिक प्रगति होनी है। स्थूल स्तर पर मानव पूरी तरह से परिपक्व हो चुका है बिल्कुल उसी बीज की तरह से जो पूरी तरह से पककर अंकुरण की संभावना से परिपूर्ण है। जरूरत है तो केवल इस बात की कि इसे उचित समय पर पृथ्वी माँ में आरोपित कर दिया जाए। मानव की संभावना कुण्डलिनी है यह पृथ्वी माँ की तरह कारणात्मक सम्बन्ध की प्रतीक है। विराट का कारणात्मक गुण

सामूहिकता है। आत्मा और कुण्डलिनी हमारे अन्दर सदाशिव और आदिशक्ति के प्रतीक है। ये कार्य-कारण से परे है, वास्तव में यही कारणात्मक सम्बन्धों को बढ़ावा देते है।

एक उदाहरण लें। मोमबत्ती जलाएँ, अपना बायाँ हाथ इसकी लौ के सम्मुख करें। मेरी फोटोग्राफ के सामने अग्नितत्व जागृत हो जाता है। और इस प्रकार मोमबत्ती की लौ में उसकी सम्भाव्य शक्ति जागृत हो जाती है। यह जागृत अग्नि तत्व बाई ओर की बाधाओं को भस्म करता है। बाधाओं को जलाती हुई मोमबत्ती की लौ से आपने दीवार काली होते हुए देखी है।

हर चीज़ का एक कारणात्मक सम्बन्ध होता है जिसमें सभी सम्भावनाएं निहित होती है। कारणात्मक से स्थूल तक हम सूक्ष्म के माध्यम से जाते है। अब क्या होता है, जैसे सुगन्ध का कारणात्मक पृथ्वी माँ है। पृथ्वी माँ के माध्यम से सभी फूल और वृक्ष बढ़ते है। मनुष्य का कारणात्मक कार्बन है। किस प्रकार पृथ्वी माँ के अन्दर अग्नि जलती है और उस अग्नि के ताप से यह कार्बन की सृष्टि करती है और यह कार्बन आपके अन्दर अमीनो एसिड (Amino Acid) बनाने का कार्य करते है। तो कारणात्मक स्तर पर माँ जानती है कि माँ क्या है। शक्ति रूप में निराकार ही कारणात्मक है और इसका उपयोग करने के लिए साकार रूप में देवी देवता है। वे इसका उपयोग करना जानते है। मध्य नाड़ी प्रणाली के माध्यम से स्थूल में इसका प्रदर्शन होता है।

साकार ही कर्त्ता है। किसी देवता विशेष की अव्यक्त शक्ति कारणात्मक है परन्तु देवताओं के जागृत होते ही उनकी शक्तियाँ भी जागृत हो जाती हैं। यह एक जीवन प्रक्रिया है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। आप भ्रूण को ही देखें, किस प्रकार यह आकार धारण करता है, कौन इसका पथ प्रदर्शन करता है, कौन इस कार्य को करता है, कौन इसे चलाता है, कौन इसकी योजना बनाता है। स्त्री रोग विशेषज्ञ से मेरा प्रश्न है-किसी भी बाह्य चीज़ को शरीर अपने अन्दर स्वीकार नहीं, करता तो भ्रूण को बाहर क्यों नहीं फेंकता? मुझे इसका उत्तर दें। कोई शक्ति इसका पोषण करती है, इसकी देखभाल करती है और एक उचित समय पर इसे बाहर भेजती है। भ्रूण माँ के गर्भ में बढ़ता है परन्तु उसे कोई कष्ट नहीं देता। परन्तु जीवन शक्ति के परिवर्तन के दौरान माँ की मुखाकृति परिवर्तित होती है। तो माँ पर ये सौंदर्य कहाँ से आता है, इसे पोषण और देखभाल पर आप नजर डालें। इस पूर्णता को देख कर आश्चर्य होता है। क्या ऐसा नहीं होता?

अपनी बुद्धि का हम कोई अन्त नहीं समझते। परन्तु परमात्मा के सम्मुख रखते हुए एक छोटा सा बीज आया और अन्त में एक नन्हा सा कोषाणु निकला। जो विवेक बुद्धि इस कोषाणु में है वह यदि मानव में आ जाए तो निश्चित रूप से सहजयोग स्थापित हो जाएगा। एक दम से यह अपने मार्ग को देख लेता है, रास्ते पर आए पत्थर को यह देख लेता है। पत्थर से यह लड़ता नहीं। इसके इर्द-गिर्द घूमकर जड़ पत्थर से लिपट जाती है ताकि पेड़ बनने पर पत्थर इसे मज़बूत बना सके। तब धीरे धीरे यह

पानी की और बढ़ती है। पानी के स्तर का इसे को पूर्वाभास नही होता। गुँजमक्षी (Bumblebee) के साथ एक बार मैने प्रयोग किया। इस पर मैने रंग लगा दिया क्योंकि यह हमारे घर में अपना घरौंदा बनाती थी। यह रंग किसी तरह उसके पंखों पर आ गया। एक दिन मै अपने घर से बहुत दूर किसी स्थान पर गई। उस गुँज मक्षी को मैने वहाँ पाया। कुछ देर बाद फिर वह मक्षी हमारे घर पर थी उसे ये सारे मार्ग कैसे पता चले। उसमे अवश्य कोई चुम्बक होगा। आस्ट्रेलिया से साइबेरिया जाकर पक्षी किस प्रकार अपने घर खोज लेते है? क्योंकि वे सब सामूहिक होते है ओर उनमें पूर्ण प्रेम होता है। सभी इक्ट्ठे चलते है। यह सब बातें पशुओं के पाश की है।

परन्तु हम मानव अब पशु नही है।, हम स्वतन्त्र है। इस स्वतन्त्रता में बहुत कुछ खो गया है और लुप्त हो गया है। तब कही मानव स्थिर होते है। आदम और हौवा के स्तर पर यह स्वतन्त्रता दी गई थी। वे यदि समझदार होते तो कोई समस्या न होती। परन्तु अब इस स्वतन्त्रता के लिए बहुत कीमत चुकानी पड़ रही है। आजकल सब कार्यान्वित हो रहा है। विज्ञान को यह जीवन्त प्रक्रिया नहीं समझाई जा सकती। वैज्ञानिक देवी देवताओं को तो मानेंगे नहीं। अत: उनकी चिन्ता छोड़ दे हमारे यहाँ यदि वैज्ञानिक नही है तो हानि क्या है, उन्हें भी हम छोड़ेंगे नही।

वैज्ञानिकों के लिए आवश्यक है कि वे स्वयं को देखें। इसके बारे में कुछ अधिक वर्णन नही किया जा सकता। सल्फर-डायक्साइड मे चैतन्य लहरियाँ है। ये विद्युत चुम्बकीय- सममित (Electro Magnetic Symmetric) होती है। और आइसोसिमैट्रिक (Isosymmetric) होती है। वैज्ञानिक जो भी कुछ देखते है उसी का वर्णन करते है। सहजयोग में भी वे देखेंगे यह क्या है? आप लोग उन्हें तथ्य बताएं और इसका अनुभव उन्हें दें। वैज्ञानिक रूप से किस प्रकार आप उन्हें चीजें दिखा सकते है?

# एकादश रुद्र पूजा - 1984

16/9/84

एकादश रुद्र की महिमा गान करने के लिए आज हम एक विशेष प्रकार की पूजा कर रहे है। रुद्र श्री शिव की, आत्मा की, विध्वंसक शक्ति है। उनकी एक शक्ति, जो उनका स्वभाव है, 'क्षमा है।' मानव होने के कारण हम लोग गलतियाँ करते है, गलत कार्य करते है, प्रलोभनों मे फँसते है और हमारा चित्त भी अस्थिर है; परन्तु मानव जानकर वे हमें क्षमा करते है। जब हम अपने पावित्रय को बिगाड़ते है; अनैतिक कार्य करते है, चोरी आदि करते है या उनके (शिव) के विरुद्ध कार्य करते है तब भी वे हमें क्षमा करते है। वे हमारे छिछोरेपन, ईर्ष्या, कामुकता एवं क्रोध को भी क्षमा करते है। हमारी लिप्सा, क्रूरता और स्वामित्व भाव को भी क्षमा करते है। हमारे अहंकारमय आचरण और गलत चीजों की गुलामी को भी वे क्षमा करते है। परन्तु जिस प्रकार हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है तो जब वे क्षमा करते है तो सोचते है कि उन्होंने आप पर बहुत बड़ी कृपा की है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् भी क्षमा पाकर जब लोग बड़ी-बड़ी गलतियाँ किए चले जाते है तो प्रतिक्रिया स्वरूप उन लोगों के विरुद्ध भगवान शिव के अन्दर यह प्रतिक्रिया कोप का रूप धारण कर लेती है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को बहुत बड़ा आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है, उसे प्रकाश मिल जाता है, परन्तु इस प्रकाश में भी यदि व्यक्ति गलत मार्ग पर चलता रहे तब भगवान शिव का कोप उग्र हो जाता है। वे सोचते है कि यह व्यक्ति कितना मूर्ख है। मेरे कहने का अभिप्राय ये है कि आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति के प्रति श्री शिव बहुत अधिक संवेदनशील हो जाते है कि इन लोगों को क्षमा दे दी गई, आत्मसाक्षात्कार जैसा आशीर्वाद दे दिया गया, फिर भी ये गलत कार्य किए चले जाते है तब वे और अधिक कुपित हो जाते है और संन्तुलन के रूप क्षमा घटती चली जाती है और क्रोध बढ़ने लगता है। परन्तु जब आप क्षमा करते है और उस क्षमा के परिणाम स्वरूप स्वयं को कृतज्ञ मानते है तब उनके आशीर्वाद की वर्षा आप पर होने लगती है। दूसरों को क्षमा करने की अथाह शक्ति वे आपको प्रदान करते है। वे आपके क्रोध को शान्त करते है, आपकी कामुकता को शान्त करते है, लोभ को शान्त करते है। ओस की सुन्दर बूँदों सम उनका आशीष हमारे अस्तित्व पर पड़ता है और हम वास्तव में सुन्दर पुष्पों सम बन जाते है। उनके आशीष की शीतल धूप में हम चमक उठते है। अब वे अपने क्रोध एवं विध्वंसक शक्ति का उपयोग उन सभी तत्वों को नष्ट करने में करते है जो हमें कष्ट देती है। हर कदम पर, हर प्रकार से वे आत्मसाक्षात्कारी लोगों की रक्षा करते है।

आसुरी शक्तियाँ सहजयोगियों को अपनी चपेट में लेने का प्रयत्न करती है परन्तु एकादश रुद्र की महान शक्ति से वे शान्त हो जाती है। **चैतन्य चेतना के माध्यम से हम ठीक मार्ग पर आ जाते हैं। उनके सुन्दर आशीर्वादों का वर्णन बाइवल** के साथ (psalm-23) में किया गया है-'परमात्मा मेरे संरक्षक (Shephard) है।' सारा वर्णन किया गया है कि एक चरवाहें की तरह से किस प्रकार वे आपकी देखभाल करते हैं, परन्तु वे आसुरी लोगों की देखभाल नहीं करते। वे उन्हें त्याग देते है। **सहजयोग में आकर भी जो लोग आसुरी स्वभाव नहीं छोड़ते उन्हें वे नष्ट कर देते है।। सहजयोग में आकर भी जो ध्यान धारणा नहीं करते उन्हें या तो वे नष्ट कर देते हैं या सहजयोग से बाहर फैंक देते हैं। जो लोग परमात्मा के विरुद्ध अफवाहें फैलाते हैं और जिनका रहन-सहन ऐसा है जो सहजयोगियों को शोभा नहीं देता, ऐसे लोगों की समस्या भी वे समाप्त कर देते हैं।** इस प्रकार एक शक्ति से तो वे रक्षा करते हैं और दूसरी से बाहर फैकते है। उनकी विध्वंसक शक्तियाँ जब बहुत बढ़ जाती है तब हम कहते है कि ''एकादश रूद्र गतिशील हो उठे है। अब जबकि कलकी स्वयं गतिशील होगी तो एकादश रुद्र की अभिव्यक्ति होगी अर्थात् इसकी विध्वंसक शक्ति पृथ्वी पर विद्यमान आसुरी शक्तियो को नष्ट करेगी और सभी शुभ तत्वों की रक्षा करेंगी। इसलिए सभी सहजयोगियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि शीघ्र, अति शीघ्र आपने उत्थान को प्राप्त कर लें। अपने सामाजिक, विवाहित जीवन से या परमात्मा के जो आशीर्वाद उन्हें प्राप्त हुए है उनसे संतुष्ट होकर न बैठ जाएं।

आप हमेशा सोचते है कि परमात्मा ने हमारे लिए क्या किया है? किस प्रकार से उन्होंने हमारे लिए चमत्कार किए। परन्तु हमें सोचना चाहिए कि हमने अपने लिए क्या किया? अपनी उन्नति और उत्थान के लिए हम क्या कर रहे है ?

ग्यारह रुद्रों में से पाँच आपके भव सागर के दाई ओर के है और पाँच बाई ओर के । आपने यदि कुगुरुओं के सम्मुख सिर झुकाया हो या गलत पुस्तकें पढ़ी हों या गलत लोगों की संगति में रहे हों या गलत मार्ग पर चलने वाले लोगों के प्रति आपकी सहानुभूति हो या आप स्वयं किसी कुगुरु के प्रतिनिधि रहे हों तो भवसागर के बाई ओर के पाँच एकादश कुपित हो जाते है। परन्तु यदि हम ऊपर वर्णित कुकृत्यों को छोड़ दें तो इन पाँचों रुद्रों की समस्या का समाधान हो सकता है। मोहम्मद साहब ने कहा कि शैतान को जूतों से पीटें। परन्तु यह कार्य आपको हृदय से करना होगा मशीन की तरह से नहीं। सहजयोग में आने वाले बहुत से लोग मुझे बताते है कि 'मेरे पिताजी फलाँ गुरु को मानते है।' लिप्सा भाव से इन गलत गुरुओं को मानने वाले माता-पिता, बहन - भाई आदि को उन गुरुओं के चँगुल से छुड़वाने में लगे हुए सहजयोगी भी फँस जाते है या इन आसुरी शक्तियों के सामने घुटने टेक देते है। मै एक सहजयोगिनी को जानती हूँ जिसके माता-पिता

ने कहा कि उसके बच्चे का बपतीस्म अवश्य होना चाहिए। मैंने उसे बताया कि वह इस बच्चे का बपतीस्म नहीं करा सकती क्योंकि वह आत्म साक्षात्कारी है। परन्तु वह अपने माता-पिता का विरोध न कर सकी और बच्चे को बपतीस्म के लिए ले गई और अब उस बच्चे की दशा बड़ी अजीवो गरीब हो गई है। बच्चा पागल सा दिखाई देता था। मैंने स्वयं ये सब देखा है। अन्ततः उस महिला को यह सब छोड़ना पड़ा तब कहीं उसकी रक्षा हुई। यदि उसका एक और बच्चा होता तब भी वो ऐसा ही करती और दूसरे बच्चे की स्थिति बहुत ही अधिक खराब हो जाती।

**सहजयोगियों के साथ समस्या ये है कि जो भी लोग सजहयोग के कार्यक्रम में आते हैं वो स्वयं को सहजयोगी समझने लगते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं होता।** या तो आपमें बहुत तेज संवेदनशीलता होनी चाहिए और यदि आप अपने शरीर पर या अपनी बुद्धि से महसूस करते है तो आपको समझना चाहिए कि सहजयोग क्या है? नकारात्मक व्यक्ति सदैव अधिक नकारात्मक लोगों के प्रति आकर्षित होता है। वह ये भी नहीं समझ पाता कि दूसरा व्यक्ति इतना भयानक रूप से नकारात्मक है वह उससे प्रभावित हो जाता है। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति को नकारात्मक प्रभाव के कारण चोट पहुँचती है और भगवान शिव भी उसकी रक्षा नहीं कर पाते।

**हमें किसी भी नकारात्मक व्यक्ति से सहानुभूति नहीं होनी चाहिए चाहे वह पागल हो, चाहे उसे कोई परेशानी हो, चाहे वह आपका सम्बन्धी हो या कुछ और। ऐसे लोगों से सहानुभूति होनी ही नहीं चाहिए। इसके विपरीत ऐसे लोगों के लिए हमारे अन्दर एक प्रकार का क्रोध, निर्लिप्सा एवं क्रोधपूर्ण अलगाव होना चाहिए। यह क्रोधमय निर्लिप्सा केवल ऐसे लोगों के लिए ही होनी चाहिए।** इसके अतिरिक्त क्रोध का सहजयोगियों में कोई स्थान नहीं। मैंने देखा है कि लोग बहुत अच्छे सहजयोगियों पर क्रोध करते हैं परन्तु अपने अत्यधिक नकारात्मक पति-पत्नियों पर क्रोध नहीं करते।

तो जब ये एकादश पाँच ओर से गतिशील हो उठते है, क्यों कि जब ये बाई ओर से दाई ओर को आते हैं, तो व्यक्ति नकारात्मक होकर अहंवश कार्य करने लगता है। ऐसा व्यक्ति किसी भी स्थिति को अपने हाथों में लेकर कह सकता है कि मै फलां सहजयोगी हूँ, मै फलां हूँ और हमें ऐसा करना चाहिए, आपको इस प्रकार आचरण करना चाहिए। वह लोगों पर रौब झाड़ने लगता है और कुछ अधकचरे औसत वर्ग के सहजयोगी उसे मानने लगते है। परन्तु बहुत से लोग ये जानते है कि वह सहजयोग से बाहर जाने के रास्ते पर चल पड़ा है। वह व्यक्ति बाई ओर के प्रकोप में आने लगता है या हम कह सकते है कि मेधा (मस्तिष्क) के दाएं हिस्से में। माथे (Forehead) को संस्कृत में मेधा कहते है।

दाई ओर के व्यक्ति के मन में ये विचार होता है कि मै स्वयं बहुत बड़ा गुरु हूँ। वे सहजयोग

के विषय में भी शिक्षा देने लगते हैं मानो वे बहुत महान गुरु बन गए हों। हम कुछ लोगों को जानते हैं जो किसी भी कार्यक्रम में बड़े-बड़े भाषण देते हैं, मेरे भाषण के टेप तक नहीं चलने देते। वे समझते हैं कि वे बहुत बड़े विशेषज्ञ हो गए हैं। उनमें से कुछ तो कहते हैं कि अब हम बहुत ऊँचे हो गए हैं, कि हमे पानी पैर क्रिया की कोई आवश्यकता नहीं, हमें ध्यान धारणा की भी कोई आवश्यकता नहीं। ऐसे कुछ लोग कहते हैं कि हम सहजयोगी हैं और आस.पास की चीज़ों का हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। हम इतने महान हैं। परन्तु उनमें से सबसे अधम वो लोग है जो मेरा नाम लेकर लोगों को हुक्म देते हैं कि 'श्री माताजी ने ऐसा कहा हैं' मैं इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि श्री माताजी ने ऐसा कहा है, जबकि, मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही होती। यह सब झूठ है। कुछ लोग ऐसे भी है जो सहजयोग का उपयोग करते हैं और सहजयोगियों को अनुचित लाभ उठाते हैं। **ऐसे लोग अमंगलमय हो जाते हैं। इस प्रकार के कार्य करने वाले व्यक्ति अत्यन्त अपमान-पूर्वक सहजयोग से बाहर चले जाते हैं। हमें ऐसे व्यक्ति के समीप कभी नहीं जाना चाहिए, उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए और नहीं उससे हमें कोई सहानुभूति होनी चाहिए क्योंकि उसकी यह अमंगलमयता किसी को भी किसी भी सीमा तक हानि पहुँचा सकती है। तो ऐसे लोगों से दूर रहने में ही हित है।** किसी व्यक्ति में जब यह दसों एकादश विकसित हो जाते है। तब निश्चित रूप से उसे कैंसर या कोई अन्य भयानक लाइलाज रोग हो जाता है। विशेष तौर पर जब ग्यारहवाँ रुद्र यहाँ (माथे में) हो - जो कि विराट चक्र है और जो सामूहिकता है। जब यह भी बाधित हो जाता है तो ऐसा व्यक्ति इससे निकल नहीं सकता। इन पाँचों में से यदि यह एक मान लो, मूलाधार या अगन्य से जुड़ जाए तो व्यक्ति को अत्यन्त घिनौनी बीमारियाँ हो सकती है। इसीलिए मैं सदैव कहती हूँ कि अपने अगन्य चक्र के विषय में सावधान रहें क्योंकि यदि यह एक बार एकादश रुद्रों या उनके एक भाग से जुड़ जाए तो व्यक्ति को कुछ भी हो सकता है। उसकी भयानक दुघर्टना हो सकती है, अचानक उसे कोई आघात पहुँचा सकता है, कोई उसका कत्ल कर सकता है। जिस व्यक्ति को दाई आज्ञा और कोई एकादश (बायां या दायां) खराब हो उसके साथ कुछ भी हो सकता है। अर्थात् यह पाँचों या इन में से कोई एक यदि अगन्य चक्र समेत खराब हो तो परमात्मा की संरक्षण शक्तियाँ कम हो जाती है। अत: अपने अगन्य चक्र को ठीक रखे। अब जैसे मैं बोल रही हूँ आप निरन्तर मेरी ओर देखें ताकि आपमें निर्विचार चेतना आ जाए और अगन्य चक्र शान्त हो जाए। हर समय अपने चित्त को इधर-उधर न भटकने दें, तब आप पाएंगे कि आपका चित्त निर्विचार चेतना में परिवर्तित होता जा रहा है। और तब आपका चित्त इस प्रकार स्थिर जो जाएगा कि आपको किसी भी चीज़ की चिन्ता न करनी पड़ेगी। **निर्विचार चेतना में कोई भी आपको छू**

**नहीं सकता, यह आपका किला है। ध्यान – धारणा द्वारा हमें निर्विचार चेतना स्थापित करनी चाहिए। इससे पता चलता है कि हम ऊँचे उठ रहे हैं। कुछ लोग ध्यान धारणा करते हैं और कहते हैं श्री माताजी, ठीक है, हम ध्यान कर रहे हैं। मशीन की तरह से वे ध्यान करते हैं और कहते हैं कि मैंने यह किया, मैंने वह किया। परन्तु क्या आपको निर्विचार समाधि की अवस्था प्राप्त हुई जो कि आरम्भिक (Minimum of Minimum) स्थिति है?**

क्या आपने अपने सिर से शीतल लहरियाँ निकलते हुए महसूस की? यदि आप मशीन की तरह से ध्यान कर रहे हैं तो इससे कोई लाभ न होगा न आपको न किसी अन्य को। **आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् क्योंकि आप भली-भाँति सुरक्षित होते हैं इसलिए आपको सभी आशीर्वाद प्राप्त हो जाते हैं और एक महान भविष्य आपके सम्मुख होता है परन्तु पूर्ण विनाश की सम्भावना भी आपके सम्मुख होती है।** समानता का एक उदाहरण देते हुए मै कहूंगी कि उत्थान पथ पर सभी लोग हाथ पकड़कर आपको आश्रय दे रहे है और उन्नत होने के लिए विविध प्रकार से आप सुरक्षित है। परन्तु गतली से नीचे गिर जाने की भी सम्भावना है। यदि आप सत्य और प्रेम से सम्बन्ध तोड़कर हर समय आश्रय देने वाले लोगों को चोट पहुँचाने का प्रयत्न करते है तो आप बहुत ऊँचाई से गिर जाते हैं। क्योंकि जिस ऊँचाई पर आप होंगे उसी से ही आप गिरेंगे और उतनी ही अधिक शक्ति से गिरेंगे और गहरी खाई में जा पड़ेंगे।

गहरी खाई से आपको बचाने के लिए परमात्मा ने सारे प्रयत्न किए है आपको पूरी सहायता दी है फिर भी यदि आप उस ऊँचाई से गिरना चाहते है तो यह बहुत भयानक है। सहजयोग में होते हुए भी यदि कोई व्यक्ति सहजयोग के कार्य को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है तो एकादश रुद्र उसे इतनी बुरी तरह चोट पहुँचाते है कि उनका आक्रमण बहुत ही विस्तृत होता है। परिवार के कुछ लोग यदि सहजयोग कर रहे है तो भी पूरे परिवार की रक्षा हो सकती है। परन्तु पूरा परिवार ही सहजयोगियों के विरुद्ध है ओर उन्हें परेशान करने की कोशिश करता है तो ऐसा परिवार पूर्णत: नष्ट हो सकता है। अब जैसे मैने आपको बताया ये एकादश रुद्र भवसागर से निकलते है। अत: हम कह सकते है कि विनाशकारी भाव मुख्यत: भवसागर से आता है। परन्तु ये सब शक्तियाँ एक ही अवतरण को दी गई है। श्री महा विष्णु को- जो कि भगवान ईसामसीह है, जिन्होंने क्रॉस थामा हुआ है। आपकी तथा पूरे विश्व की रक्षा करने वाली सभी चीज़ों के वे ही आधार है। वे ओंकार मूर्ति है, वे ही चैतन्य स्वरूप है। जब वे क्रोधित होते है तो पूरा ब्रह्माण्ड टूटने लगता है। हर अणु रेणु में, हर मानव में, सभी जड़ चेतन में वे ही विद्यमान है, उनके कुपित हो जाने से सभी कुछ खतरे में पड़ जाता है। अत: ईसामसीह को प्रसन्न रखना अत्यन्त आवश्यक है। ईसा ने कहा है हमें नन्हें बच्चों की तरह से

होना पड़ेगा अर्थात् अबोध। हृदय की पवित्रता ही उन्हें प्रसन्न करने का सर्वोत्तम मार्ग है। पश्चिमी देशों में, विशेष कर के, लोगों ने अपने मस्तिष्क बहुत अधिक विकसित कर लिए है। शब्दों से खिलवाड़ करके वे सोचते है कि उन जितना ज्ञान किसी को नहीं है। ऐसे लोगों को समझ लेना चाहिए कि जो भी कुछ आप कर रहे है परमात्मा उसे जानते है। आप यदि हृदय से शुद्ध नहीं है तो ऐसे व्यक्ति के लिए यह सोचना कि वह बहुत अच्छा सहजयोगी है बहुत खतरनाक है। ऐसे लोग न तो भूतबाधित है न ही बन्धनग्रस्त। वे अहं ग्रस्त व्यक्ति है। परन्तु वे अत्यन्त चालाक लोग है जो इस बात को जानते है कि वे क्या कर रहे है। कुछ लोग भूत बाधित होकर स्वयं को नष्ट करने का प्रयत्न करते है या रोते है, बिलखते है और सभी प्रकार के कार्य करते है। कुछ लोग सोचते है कि यदि वे स्वयं को कष्ट देंगे या कोई और ऐसा कार्य करेंगे तो परमात्मा प्रसन्न हो जाएंगे, ऐसे लोग भयंकर गलती में है।

**सहजयोग में यदि आप आनन्द नहीं उठा सकते तो जान लीजिए कि आपमें कोई कमी है। सहजयोग में यदि आप प्रसन्न नहीं रह सकते तो आपको जान लेना आवश्यक है कि निश्चित रूप से आपमें ही कोई कमी है। सहजयोगियों की संगति का आप यदि आनन्द नहीं उठा सकते तो भी आपको जान लेना चाहिए कि आपमें अवश्य कोई कमी है। परमात्मा की महानता को यदि आप नहीं सराह सकते तो भी आप ही में कुछ कमी है। नकारात्मक लोगों और उनकी समस्याओं के विषय में यदि अब भी आप चिन्तित हैं तो आप जान लें कि आप ही में कुछ कमी हैं। बुरे लोगों से यदि आपको सहानुभूति है तो भी आप ही में कुछ कमी है।** परन्तु यदि सहजयोग विरोधी नकारात्मक लोगों और सारी नकारात्मकता के प्रति आपमें क्रोध है तो आप ठीक हैं। यह चीज़ जब परिपक्व हो जाएगी तो आप स्वयं एकादश की शक्ति बन जाओगे। जो भी व्यक्ति आपको अपमानित करने और हानि पहुँचाने का प्रयत्न करेगा वह समाप्त हो जाएगा। जिन लोगों ने किसी भी प्रकार से मुझे अपमानित करने का प्रयत्न किया या आपको हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया उनके साथ ऐसा घटित हो चुका है। कभी-कभी तो मुझे उनके विषय में बहुत चिन्ता होती है। तो व्यक्ति को ऐसा होना चाहिए कि वह स्वयं एकादश बन सके। ऐसे लागों को कोई छू भी नहीं सकता। परन्तु ऐसे व्यक्ति करुणा से और क्षमा से परिपूर्ण हो जाते है।

परिणामस्वरूप एकादश बहुत तेजी से कार्य करने लगते है। जितने अधिक करुणामय आप होंगे एकादश उतने ही अधिक शक्तिशाली हो जाएंगे। जितने अधिक सामूहिक चेतन आप होंगे उतने ही अधिक एकादश कार्य करेंगे। **एकान्त में बैठकर कुछ लोग कहते हैं कि घर में रहना ही ठीक है परन्तु वे नहीं जानते कि वे क्या खो रहे है? दूसरे लोगों के साथ आप के जो भी अनुभव**

**रहे हों फिर भी आपको चाहिए कि उनके साथ मिलकर रहें। सदैव कार्यक्रमों में भाग लें,** कार्य भार सम्भाले, इसके लिए आगे बढ़ें, इसे कार्यान्वित करें। तब आपको हजारों गुना आशीर्वाद प्राप्त होंगे।

एकादश रुद्र पूर्ण विध्वंसक शक्तियाँ है। ये श्री गणेश की विध्वंसक शक्तियाँ हैं। श्री ब्रह्मा, विष्णु और महेश की विध्वंसक शक्तियाँ है। माँ आदिशक्ति की विध्वंसक शक्तियाँ है। ब्रह्मा विष्णु, महेश की विध्वंसक शक्तियों के अतिरिक्त ये श्री भैरव, श्री हनुमान, श्री कार्तिकेय और श्री गणेश की भी विध्वंसक शक्तियाँ है। ये श्री सदाशिव और आदिशक्ति की भी शक्तियाँ है। सभी अवतरणों की विध्वंसक शक्तियाँ एकादश हैं। इसके अतिरिक्त एकादश रुद्र हिरण्यगर्भ की भी विध्वंसक शक्ति है। जब यह शक्ति गतिशील होती है तो हर अणु का विस्फोट हो जाता है। पूरी आण्विक ऊर्जा विध्वंसक शक्ति बन जाती है। तो पूरी विध्वंसक शक्ति ही एकदश रुद्र है। यह अत्यन्त शक्तिशाली और विस्फोटक है। परन्तु यह अन्धी नहीं है अत्यन्त विवेकशील है और अति कुशलता पूर्वक गुथी हुई है। सभी अच्छाइयों को छोड़ती हुई यह बुराइयों पर आक्रमण करती है और उचित समय पर उचित स्थान पर सीधे ही चोट पहुँचाती है। बीच में खड़ी किसी भी अच्छी चीज़ को हानि नही पहुँचाती। उदाहरण के रूप में मान लो कि एकादश रुद्र की दृष्टि किसी व्यक्ति पर पड़ रही है परन्तु वीच में कोई दिव्य या सकारात्मक चीज़ है तो सकारात्मक के बीच में से गुजरती हुई, उसे बिना कोई हानि पहुँचाए, यह नकारात्मक को चोट पहुँचाती है। कुछ लोगों को यह शीतल करती है और कुछ अन्य को जला देती है, इतनी कोमलता और सूझ वूझ से यह कार्य करती है। यह अत्यन्त तेज भी है और अत्यन्त कष्टदायी भी। झटके से यह गला नहीं काटती धीरे धीरे करके यह इस कार्य को करती है। जिन भी भयानक कष्टों के विषय में आपने सुना होगा या जिन्हें आपने देखा होगा वह सब एकादश रुद्र की ही अभिव्यक्तियाँ है। उदाहरण के लिए कैंसर का ही लें। कैंसर हो जाने पर रोगी की नाक काट लेते है, जुबान निकाल देते हैं और एक-एक करके भयंकर कष्ट के साथ भिन्न अंग निकाल दिए जाते है। कुष्ठ रोग का उदाहरण लें। कुष्ठ रोगी अपनी अंगुलियों का भी एहसास नहीं कर सकता। उनके शरीर के किसी हिस्से पर यदि कोई ज़ख्म आदि हो जाएं तो भी उन्हें उसका एहसास नहीं होता। उनकी उंगलियाँ गलने लगती हैं। इस प्रकार शनैः - शनैः एकादश रुद्र लोगों को खा लेता है, उन्हें निगल लेता है।

परन्तु परम पिता की दृष्टि जब अपने बच्चों पर पड़ती है तो ये भयानक क्रोध अत्यन्त मृदु तथा मधुर रूप में परिवर्तित हो जाता है। माँ महाकाली की एक कथा है। एक बार वे अत्यन्त कुपित हो गईं। इतनी कुपित कि अपनी एकादश शक्तियों से उन्होंने पूरे विश्व को नष्ट कर देना चाहा। वे पूरे विश्व को ही नष्ट करने लगी थीं। भगवान शिव ने जब उन्हें इतना क्रोधित देखा तो वे घबरा गए। महाकाली ने जब अपनी

विनाश लीला शुरु की और विनाश नृत्य करने लगीं तो शिव को समझ नही आया कि उन्हें किस प्रकार रोकें। उन्होंने उनका बच्चा उठाया, आप कह सकते है कि वो भी एक सहजयोगी, ईसा मसीह या उनका कोई अन्य महान बालक होगा, और उसे उनके चरणों में डाल दिया। देवी के चरणों से जब धप्प-धप्प हो रही थी तो उनकी दृष्टि पैरों में पड़े अपने बच्चें पर पड़ी। उसे देखकर उनकी जुबान बाहर को निकल आई और उनका विनाश नृत्य रुक गया। ऐसा केवल एक ही बार घटित हुआ।

एकादश रुद्र के गतिशील होने पर अन्ततः सदाशिव के क्रोध के कारण पूर्ण विनाश हो जाता है। तब पूर्ण प्रलय आ जाती है। अतः हमें ज्ञान होना चाहिए कि किस प्रकार एकादश रुद्र कार्य करता है और किस प्रकार सहजयोगियों को स्वयं एकादश रुद्र बनना है। यह शक्ति स्वयं में विकसित करने के लिए व्यक्ति को अपने अन्दर निर्लिप्सा की अगाध शक्ति विकसित करनी होती है- नकारात्मकता से अलगाव। उदाहरण के रूप में नकारात्मकता भाई, बहन, माता-पिता, मित्र तथा अन्य नज़दीकी रिश्तेदारों से आ सकती है। आपके अपने देश से भी आपको नकारात्मकता मिल सकती है। आपके आर्थिक और राजनीतिक विचार भी आपको नकारात्मक बना सकते है। किसी भी प्रकार का गलत तदात्मय आपकी एकादश शक्तियों को नष्ट कर सकता है। यह कहना पर्याप्त नहीं है कि मै सहजयोगी हूँ और सहजयोग के प्रति समर्पित हूँ। आपको मस्तिष्क से भी समझना होगा कि सहजयोग क्या है ताकि विवेकशीलता से आप समझ सकें कि सहजयोग वास्तव में क्या है। पश्चिमी देशों में विशेष रूप से, लोग आवश्यकता से अधिक बुद्धिमान है। सहजयोग का प्रकाश उनकी बुद्धि में प्रवेश नहीं करता। आप अपनी लिप्साओं पर काबू नहीं पा सकते। इसका अर्थ ये नही है कि आप सहजयोग के विषय में बहुत अधिक बातें करें और या सहजयोग पर लम्बे भाषण दें। बुद्धि से भी आपको समझना चाहिए कि सहजयोग क्या है ?

आज विशेष दिन है। कहा गया है कि हम एकादश रुद्र पूजा करें। यह सभी झूठ-मूठ के धर्मों, पंथो, गुरुओं के लिए है जो परमात्मा या धर्म के नाम पर लोगों को भ्रमित करते है तथा उन धर्मों के लिए है जो आत्मसाक्षात्कार की बात नहीं करते और न ही आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करके परमात्मा से योग प्राप्त करते है। ये सब झूठे है। इस प्रकार की घड़ी गई बातों को परमात्मा से कोई सम्बन्ध नहीं, ये सच्चे धर्म नहीं हो सकते। निःसन्देह ये लोगो को सन्तुलन देते है। परन्तु ऐसा करते हुए यदि ये लोगों से धन एकत्र करते है और उस धन से ऐश करते है तो यह तो धर्म का निम्नतर स्तर भी न हुआ। आरम्भ में आपको सन्तुलन प्रदान करना धर्म का कार्य है। परन्तु सन्तुलन का ढ़िंढोरा पीटने के लिए यदि वे आपसे धन माँगते है तो यह सन्तुलन नहीं हो सकता। इसमें परमात्मा का आशीर्वाद भी नहीं हो सकता। अवतरणों के अतिरिक्त किसी अन्य के सम्मुख झुकने के

*(शेष पृष्ठ 31 पर)*

# आदिशक्ति पूजा

## कन्ना जोहारी, अमेरिका - 20-6-99
## परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आप सब लोगों को यहाँ एकत्र हुआ देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। शहरों की पागल भीड़ से बहुत दूर यह चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण सुन्दर स्थान है। अमेरिका के एक बहुत मोटे अखबार के पन्नों में से अचानक मैंने यह स्थान छाँटा। चैतन्य लहरियाँ इस प्रकार फूट पड़ रही थी कि मैंने कहा यह क्या है? कहाँ से ये चैतन्य-लहरियाँ आ रही है? इसका विज्ञापन बहुत छोटा सा था परन्तु इसे देखकर मैंने कहा कि यही वह स्थान है जहाँ हमें जाना है। विज्ञापन मे भी इस स्थान मे बहुत चैतन्य-लहरियाँ हैं। अत: आप कल्पना कर सकते है कि किस प्रकार पथ-प्रदर्शन प्राप्त होता है। चैतन्य लहरियाँ यह पथ प्रदर्शन प्रदान करती है। इन्हीं के माध्यम से मै यहाँ पहुँची और परमेश्वरी शक्ति ने यह स्थान चुना। यह सब एक ही दिन में घटित हुआ। ऐसे चमत्कारिक कार्य भी एक ही दिन में हो जाते है। स्थान खरीदने के लिए उन्हें बहुत समय लग रहा था। परन्तु अचानक मैंने बताया कि यह स्थान ले लें तो अच्छा होगा। ये सब कुछ हो गया और अब हम इस सुन्दर वातावरण में बैठे है।

निश्चित रूप से आप जानते होंगे कि मूल भारतीयों (Red Indians) को खदेड़ दिया गया था और छुपने के लिए वे यहाँ आए थे। इस स्थान पर वे छुपे रहे ताकि उन्हे नष्ट न कर दिया जाए। वह युग अब समाप्त हो गया है लोगों को दास बनाकर उनकी भूमि में प्रवेश करके उस पर कब्जा कर लेना और इसे बहुत बड़ी बहादुरी मानने का युग। वह सब अब समाप्त हो गया है। मानवीय सूझ-बूझ अब बहुत ऊँची उठ गई है और लोग अब यह जानते है कि ऐसा करना गलत है और अपराध है। वे जानते है कि जो हमने किया था वो गलत था। ये अपराध करने वाले लोग तो अब जीवित नही है परन्तु उनके नाती पोते-पड़पोतों को अब ये चीजे अच्छी नहीं लगती क्योंकि किसी की भूमि को हथियाने का अधिकार उन्हे नही है। नि:सन्देह भूमि किसी की नहीं हो सकती, फिर भी जहाँ आपने जन्म लिया है वह आपकी भूमि है और वहाँ जन्मे लोगों का ही उसपर अधिकार है। परन्तु युग-युगान्तरों से इस-प्रकार के आक्रमण होते रहे है। अब समय आ गया है कि आप इस प्रकार के दुस्साहस त्याग दें कि किसी की भूमि में घुसकर, किसी के घर में घुसकर उस पर कब्जा कर लें।

अब मै एक अन्य प्रकार का आक्रमण देख रही हूँ। अपनी बात-चीत से, आक्रामक दृष्टिकोण

से कुछ लोग अन्य लोगों के मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं उन्हें अपना दास बना लेते हैं। आधुनिक समय, मेरे विचार से ऐसा है जिसमें लोगों को उचित-अनुचित के विषय में सोचने की या उचित चीज़ों को अपनाने की भी स्वतन्त्रता नहीं है। आस पास घटित होने वाली सभी चीज़ों को अपनाने के लिए लोग विवश है चाहे वे चरित्रहीन हो, चाहे विनाशकारी। व्यक्ति को यह सब स्वीकार करनी पड़ती है क्योंकि अभी तक मै सोचती हूँ, हमारे पास पर्याप्त संख्या में सहजयोगी नहीं है जो इन आधुनिक दुष्प्रवृत्तियों का विरोध कर सकें। एक अन्य प्रकार का आक्रमण भी है इसमें कुगुरु आक्रमण करते है विशेष तौर पर अमेरिका में। इस मामले में अमेरिका वास्तव में अभिशप्त है क्योंकि उसके पास धन है। इसलिए विश्व के सभी धूर्त्त यहाँ आए। कल्पना करें। केवल धन का होना ही आशीर्वाद नहीं है। यहाँ आकर इन सब धूर्तो ने वैभवशाली लोगों को लूटा और अपने लिए बेशुमार धन बनाया। इस प्रकार का शोषण अत्यन्त भयानक है, बहुत अधिक भयानक। क्योंकि इससे मस्तिष्क भ्रष्ट हो जाता है। मैने देखा बहुत से लोग-बहुत से साधक पूरी तरह से भ्रष्ट हो गए। मुझे आशा है कि पुनर्जन्म लेकर वे आत्म साक्षात्कार पा लेंगे। नि:सन्देह जिज्ञासा तो है परन्तु सभी प्रकार की बाधाएं और प्रलोभन भी है। इसलिए सारी जिज्ञासा, सच्ची एवं ईमानदार जिज्ञासा के बावजूद भी वे ऐसे चँगुलों में फँस गए कि मै वर्णन भी नहीं कर सकती कि ऐसा क्यों हुआ। परन्तु ऐसा हुआ। व्यक्ति को यह सब देखना चाहिए, यह आपको दयनीय और दुखी बनाता है। परन्तु अभी भी बहुत से कुगुरु वहाँ पर हैं। आप भी वहाँ है, अब इसे देखें। इस अन्तिम निर्णय में उस स्तर से उन्नत होकर आप इस नए स्तर तक पहुँचे है जहाँ, मुझे विश्वास है कि आप लोग अन्य लोगों को भी विश्वस्त कर सकेंगे। हर व्यक्ति कम से कम एक हजार लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकता है। और आप लोग तो इतनी अधिक संख्या में हैं। विश्व, जिसे हम अन्यथा नहीं बचा सकते, का यह बहुत बड़ा उद्धार होगा।

अत: हमें समझना चाहिए कि दूसरे लोगों को बचाना अब सहजयोगियों का प्रथम कर्तव्य है। भिन्न स्थानों पर सहजयोग के बारे में बातचीत करना और सहजयोग कार्यान्वित करना। उदाहरण के रूप में, मै आश्चर्य चकित हूँ, कदाचार पीड़ित (Abused) पीड़ित बच्चों पर कार्य कर रहे हैं। भारत में हम लोग जेलों में सेना में सहजयोग कार्यान्वित कर रहे हैं। आप भी इन सभी प्रकार की गतिविधियों में प्रवेश कर सकते हैं, सभी आक्रान्त स्थानों पर जाकर सहजयोग द्वारा उनकी रक्षा कर सकते है। सर्वप्रथम, मै सोचती हूँ कि, पावनता पर आक्रमण हो रहा है। पवित्रता पर आक्रमण होना अत्यन्त भयानक है क्योंकि बहुत छोटी आयु में बच्चों को ये अन्तर्बोध हो जाता है कि उनका क्या होगा? अत: हमें इन सब अबोध बच्चों के विषय में सोचना चाहिए कि हम उनके लिए क्या कर सकते है, किस प्रकार उनकी रक्षा कर सकते

है? किस प्रकार हम यह सब कार्यान्वित कर सकते है? स्वयं से ऊपर उठकर अन्य लोगों तक पहुँचना आपका कार्य होना चाहिए। ठीक है, आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है, स्वयं को आपने सुधार लिया है, स्वयं को आप पूर्णत्व की ओर ले जा रहे है, ये सब कुछ है। परन्तु अब क्या होना चाहिए? किस उद्धेश्य के लिए आपमें यह ज्योति प्रज्जवलित की गई यह अन्य लोगों के लिए है। सहजयोगियों को अब दूसरों के लिए जीवित रहना होगा अपने लिए नहीं। उन्हें सारी शक्ति, सारा आश्रय, सारे आशीर्वाद प्राप्त हो जाएंगे।

तो अब हमें दूसरे लोगों के लिए जीना है। किस प्रकार हम दूसरे लोगों के लिए जिएं, यह बात बहुत सहज है। दूसरे लोगों के लिए चिन्ता, हर चीज़ के लिए सोच-विचार, पृथ्वी माँ के लिए, चिन्ता, अपने पड़ोसियों के लिए चिन्ता तथा विश्व भर के दुखी लोगों के लिए चिन्ता होनी चाहिए। आप यदि समाचार पत्र पढ़ें तो हैरान होंगे कि किस - प्रकार घटनाएं घटित हो रही है, किस प्रकार लोग कष्ट उठा रहे है? मूलत: हमें समझना चाहिए कि जब तक आन्तरिक परिवर्तन नहीं हो जाता तब तक इस विश्व को परिवर्तित नहीं कर सकते। आप सब लोग दूसरों में अन्तर्परिवर्तन ला सकते है। अत: लोगों में अन्तर्परिवर्तन लाना आपका कर्तव्य है, आपका कार्य है। उन्हें बताएँ कि दिव्य प्रेम क्या है? प्रेम ही सहजयोग कार्यान्वित करने का एक मात्र मार्ग है। आक्रामकता के अन्धेरे को यदि आप गहनता से देखें तो बहुत से आशीर्वाद और बहुत से लोगों के विचार स्पष्ट हो जाएंगे। यह सागर है, महानता का सागर। यह दिव्य प्रेम इतना महान है, इतना शक्तिशाली है और इतना कोमल है। प्रकृति को देखें, किस तरह से पेड़ बढ़ते है? हर पत्ते को सूर्य की धूप प्राप्त होती है, हर पेड़ की अपनी ही स्थिति है। हमें प्रकृति से बहुत कुछ सीखना है क्योंकि प्रकृति उस प्रेम से बंधी हुई है। प्रकृति में आक्रामकता का पूर्ण अभाव है। यह पूरी तरह से परमेश्वरी प्रेम के वश में है। इस सूझ-बूझ के साथ आप समझे कि जब आप साधकों के पास जाते है तो आपका दृष्टि कोण कैसा होना चाहिए? आपकी चाल-ढाल कैसी होनी चाहिए? किस प्रकार आपको उनसे बातचीत करनी चाहिए? किस प्रकार उन्हें समझना चाहिए? किस प्रकार अपना प्रेम अभिव्यक्त करना चाहिए यह बिल्कुल सम्भव है, यह कठिन नहीं है। आपकों न तो डरना चाहिए न संकोच करना चाहिए। अत्यन्त मधुरता पूर्वक आप उनसे बातचीत कर सकते है, उन्हें समझा सकते है, बता सकते है। यही वक्त है जब ये घटित होना था। यही कारण है कि आदिशक्ति को आना पड़ा। उनके बिना यह सम्भव न होता। बहुत से अवतरण आए परन्तु वे किसी चक्र विशेष पर ही सीमित रहे और कुछ अन्य स्वयं को आस-पास के लोगों में स्थापित करने में ही लगे रहे। उन्होंने प्रयत्न किया, इसे कार्यान्वित किया। परन्तु वास्तविकता में यह भली-भाँति कार्यान्वित न हो पाया। अत:

आदिशक्ति को आना पड़ा और वे सभी अवतरण भी उनके साथ आए। वे सब हमारे साथ है। वो सभी आपकी सहायता करना चाहते हैं। उनकी इच्छा है कि हर अच्छा कार्य, जो आप करना चाहते है, के लिए ये पावन चैतन्य लहरियाँ आपके साथ हों। सहजयोग के सभी कार्यों के लिए ये चैतन्य-लहरियाँ आप का पथ प्रदर्शन करने के लिए, आपकी सहायता करने के लिए, आपको बल देने के लिए और प्रेम करने के लिए ये चैतन्य लहरियाँ निश्चित रूप से आपके साथ होंगी। आप हैरान होंगे कि किस प्रकार लोग सहजयोग का कार्य आरम्भ करना चाहते हैं। सभी कोणों से किस प्रकार उन्हें आशीर्वाद प्राप्त होते हैं। अत: सब लोगों को अपने मस्तिष्क मे निर्णय करना चाहिए कि उनके सभी स्वप्न साकार हों। इसके लिए आपको समझना होगा कि सहजयोग का प्रसार करना ही आपके जीवन का लक्ष्य है। अब भी बहुत से सहजयोगी मुझे लिखते है, "श्री माताजी मेरे साथ ऐसा हो रहा है, मेरे साथ वैसा हो रहा है, मेरे पिताजी ऐसे है, मेरी माताजी वैसी है।" इस तरह का दृष्टिकोण आपको समाप्त कर देगा। यह सब अब वास्तव में समाप्त हो गया है। पहले लोग मुझे इस प्रकार के पत्र लिखा करते थे। परन्तु अब मुझे लगता है कि वो यह सब त्याग रहे है। मै नहीं जानती कि क्या हुआ है?

यह ऐसा अद्वितीय समय है जब ये प्रकाश सर्वत्र फैल गया है। प्रकृति पूर्णत: आपके साथ है। आप देख सकते है कि प्रकृति किस प्रकार कार्य कर रही है और किस प्रकार आपकी सहायता कर रही है और आपको सम्बल देने के लिए प्रयत्नशील है। किस प्रकार आपके किए सभी कार्य करने को यह उद्यत है। यह बात महसूस की जानी चाहिए और समझी जानी चाहिए कि आप अत्यन्त विशिष्ट लोग है और आप सबको एक दो को नहीं - पूर्ण सहायता प्राप्त है। केवल दस लोगों के झुण्ड को नहीं, सभी सहजयोगियों को। मानों पूरा सागर ही आपकी सहायता के लिए तैयार हो, डूबते हुए बहुत से लोगों को बचाने में आपको तैरा कर पार करने के लिए तैयार हो। आपने ऐसा सागर नहीं देखा है जहाँ इतनी गहनता है और जहाँ आनन्द के साम्राज्य में आपको मुरली बनाने के लिए, आपकी रक्षा करने के लिए सभी प्रकार के प्रयत्न किए जाते है।

आपके साथ यह सब घटित हो चुका है क्योंकि इसका एक उद्देश्य है। ऐसा केवल आपके पूर्व-पुण्यों आदि के कारण नहीं है। कुछ लोग कहते है कि पूर्वजन्मों के सुकृत्यों के कारण हमें यह प्राप्त हुआ है। यह सच है। कारण ये भी हो सकता है कि उसके परिणाम स्वरूप अब आप लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने के योग्य हो गए है और अब यही कार्य आपने करना है। आप लोग जो इस बीहड़ (संसार) में आए है उन्हें इस कि कर्त्तव्य विमूढ़ता से ऊपर उठना होगा और सभी लोगों को आशीर्वादित करना होगा, विशेष तौर पर अमेरिका के लोगों को बार-बार आशीर्वादित करना होगा क्योंकि अमेरिका

विराट है, क्योंकि यह श्री कृष्ण की भूमि है, क्योंकि लोग सदैव आपका अनुसरण करने और आपकी नकल करने का प्रयत्न करेंगे। पूर्व-पुण्य यदि आपके पास है तो नि:सन्देह चीज़ें सुधरेंगी। परन्तु अब इसके लिए कुछ कार्य करने के विषय में आपका क्या विचार है? क्यों न आप इसके लिए कुछ कार्य करें? यही अत्यन्त महत्वपूर्णतम कार्य है। अब जो कार्य आपने करना है वह है केवल अपनी गतिविधियों का पता लगाना। आप क्या करते रहे है? पता लगाएं कि आपने क्या किया और क्या कर सकते है? ध्यान धारणा करते हुए अपने विषय में सोचें। आप कितने उन्नत हुए है? आपने क्या कार्य किया है? अन्य लोगों को आपने क्या दिया है। जो कुछ आपको प्राप्त हुआ उसे यदि आप बाँटेंगे नहीं तो यह बढ़ेगा नहीं। यह मूल सिद्धान्त है जो कार्यरत है। मैंने देखा है कि कुछ लोग आत्म साक्षात्कारी है, बहुत अच्छे है, जो सहजयोग के विषय में सभी कुछ जानते है, परन्तु अभी तक उनमें आत्मविश्वास की कमी है या वे वाँछित रूप से गहन नहीं है। यह सब हो पाना केवल तभी सम्भव है जब आप नए सहजयोगी बनाने में जुट जाएंगे; अपनी मशहूरी के लिए उनके हित के लिए और मानव मात्र के हित के लिए अधिक सहजयोगी बनाने में जब आप लग जाएंगे।

मुझे कहा गया था कि मै अमेरिका आऊँ और यहाँ ठहरूँ, इससे अमेरिका का सुधार होगा। तो मै यहाँ आ गई हूँ। मै यहाँ आई, यहाँ ठहरी और निश्चित रूप से अपना पूरा चित्त यहाँ डाला क्योंकि अमरीका बहुत महत्वपूर्ण, अत्यन्त महत्वपूर्ण चक्र है। और यह इतना महत्वपूर्ण देश कभी-कभी मूर्खता पूर्ण कार्य करता है। मै नहीं कहती कि आप राजनीति में प्रवेश करें, नहीं। मै नहीं कहूँगी कि आप किसी तरह का विरोध करें या विरोधी समूह बना लें, नहीं। परन्तु आपको यह जान लेना होगा कि आपमें शक्तियाँ है, आपके विचारों और इच्छाओं में भी शक्तियाँ है इनका परीक्षण करें। एक बार जब आप आज़माइश करेंगे तो आपको पता चलेगा कि इन चीज़ों पर आपके चित्त डालने से ही कार्य हो जाएगा। मुझे विश्वास है कि इससे कार्य हो जाएगा। यह देश निश्चित रूप से मानव मात्र का उद्धार करने में सहायक हो सकता है। परन्तु यह तो उल्टी दिशा में चल रहा है। कहने से मेरा अभिप्राय है कि अमरीकी संस्कृति मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आती कि क्या है? वे कहते कुछ है और करते कुछ और है। परम्परागत इतने समय में बनाई और स्वीकार की गई उनकी मूल्य प्रणाली उचित नहीं है। उनकी मूल्य प्रणाली इतनी उलझी हुई है कि केवल सहजयोगी ही अपनी सहज प्राप्त महानता से इन लोगों की जटिलता को दूर कर सकता है। उनके विचार अत्यन्त अजीबों गरीब है। ये विचार आपको रोक न पाएं और न ही आपके मार्ग में बाधा बन सकें क्योंकि ये अत्यन्त मूर्खतापूर्ण है। ये विनाशकारी विचार है जो सारी अच्छाइयों को नष्ट कर देंगे आपको समझ लेना चाहिए कि अमरीका के सहजयोगियों

की जिम्मेदारी अन्य सहजयोगियों से कहीं अधिक है क्योंकि परमेश्वरी शक्ति उन्हें अत्यन्त सक्षम एवं प्रभावशाली मानती है। परमेश्वरी शक्ति सोचती है कि अब आपको आगे बढ़कर बहुत सा कार्य करना चाहिए। हमारे पास शक्ति भी है और मशीनरी भी। परन्तु मशीनरी यदि कार्य न करें तो शक्ति का क्या उपयोग है। वह बेकार है। अत: मशीनरी को कार्य करना चाहिए और यह कार्य कर रही है, यह फैल रही है। परन्तु हमें अपने प्रयत्नों को दुगुना करना होगा। मै यहाँ कुछ सामाजिक कार्य करने के विषय में सोच रही थी ताकि यह लोगों को प्रभावित कर सके। सूक्ष्म स्तर पर तो हमने कार्य किया है परन्तु अब हमें स्थूल स्तर पर भी कार्य करना होगा। सूक्ष्म स्तर पर तो हमने उपलब्धि प्राप्त की है परन्तु हम अभी बहुत अधिक प्राप्त कर सकते है। इससे बाहर आकर हमें सोचना होगा कि सांसारिक स्तर पर हम क्या कर सकते है जिससे लोग देख सकें कि सहजयोग क्या है और हम लोगों के लिए क्या कर सकते है। आपका व्यक्तिगत आचरण, सामूहिक आचरण, राष्ट्रीय आचरण सभी मिलकर वातावरण को परिवर्तित करेंगे- उस वातावरण को जो बनावटी है ताकि वह भी सूक्ष्म बन सकें। यह बात मै बहुत से स्थानों पर कहती रही हूँ। परन्तु इस पूजा में यह बात कहना महत्वपूर्ण है कि आप यदि वास्तव में आदिशक्ति के सम्मुख हैं तो आपको समझ लेना होगा कि आपकी शक्तियाँ अनन्त हैं। आपको वह शक्तियाँ दर्शानी होंगी। ये जड़ नहीं है, यह तो एक आन्दोलन है जो कि अच्छे प्रकार का है। ये जानता है कि कहाँ प्रवेश करना है और किस प्रकार करना है। अब इस स्थान को ही देखें। क्या आप कल्पना कर सकते है कि मै इस स्थान के विषय में सोच भी सकती थी ? मेरे मन से इतना अवश्य था कि यहाँ कहीं हमें कोई स्थान लेना चाहिए क्योंकि अमेरिका के सहजयोगियों के पास ध्यान के लिए कोई स्थान नहीं है। बस इतना ही। अब देखें किस प्रकार हमें यह स्थान मिल गया है। परन्तु आपके सूक्ष्म स्तर पर यह सब करने की इच्छा आपमें होनी चाहिए तब यह कार्य करता है, जादू की तरह से कार्य करता है। मै अब आपको बता दूँ कि स्वयं पर विश्वास करें और इसके विषय में फैसला कर लें। मै बहुत प्रसन्न हूँ कि इतनी आसानी से ये सब प्राप्त हो गया, विश्वास नही होता, इतनी आसानी से कि कोई अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी। जिस प्रकार हमें ये भूमि मिल गई ये सब इतना सहज था मानों बेचने वाला भी कोई सहजयोगी हो। बड़े जोश में वह आया, यह भूमि हमें बेची और समाप्त। न तो हमें उसे कुछ समझाना पड़ा और न ही कीमत कम करने के लिए कहना पड़ा, कुछ भी नहीं और उसने ये भूमि हमें बेच दी। इसी प्रकार सूक्ष्म स्तर पर जिस चीज़ की भी इच्छा आप करते है तो आपकी इच्छा महान शक्ति बन जाती है। और स्वयं कार्य करनें लगती है। ये जानती है कि कहाँ जाना है, किस प्रकार प्रवेश करना है और

किस क्षेत्र में और यह कार्य को करवा लेती है। इस शक्ति का अनुभव आप सब लोगों को करना चाहिए और पूर्ण विश्वास के साथ इसे कार्यान्वित करना चाहिए। यह हमारा प्रेम है, हमारी चिन्ता है इसी शक्ति ने हमें आत्म साक्षात्कार दिया है और इसी ने उपलब्धियों का वैभव हमें प्रदान किया है। मुझे विश्वास है कि यहाँ उपस्थित आप सभी लोगों ने इस बात को महसूस किया होगा कि यह सब किस प्रकार घटित हुआ और कितनी शीघ्रता से। यह हमें विश्वस्त करेगी कि हममें क्या करने की शक्ति है क्या उपलब्धि पाने की योग्यता हममें है। और जब अज्ञानान्धकार में खोए इतने लोगों के विषय में जब आप सोचते हैं तो हमें वास्तव में अपने अन्दर वह चिन्ता और वह तड़प देखनी चाहिए कि किस प्रकार मै इनकी सहायता कर सकता हूँ। आप हैरान होंगे कि एक बार जब आप इस प्रकार सोचने लगेंगे तो यह दिव्य शक्ति आपकी सहायता के लिए आती है। छोटी-छोटी चीज़ों और समस्याओं को भुला दें। आपके पीछे इतनी महान शक्ति है। ये सच है कि ये पूरा ब्रह्माण्ड और सभी कुछ सृजन करने के पश्चात् आपकी सृष्टि की गई। और यह सब कार्य हुआ। परन्तु महानतम कार्य जो इस दिव्य शक्ति ने किया वह है सहजयोगियों का सृजन। यह महानतम कार्य है। जिनमे यह ज्ञान है, यह शुद्ध ज्ञान है, जिनके हृदय में परमेश्वरी प्रेम है, उनका व्यक्तित्व कितना महान है! केवल इसके विषय में सोचें और आपको वह प्रेम अभिव्यक्त करने के सभी अवसर प्राप्त हो जाएंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

---

*(पृष्ठ 24 का शेष)*

लिए कहने वाला कोई धर्म धर्म नहीं हो सकता। यह पूर्णत: असत्य है। वास्तविक धर्म सदैव सन्तुलन प्रदान करेगा और उत्थान की बात करेगा यह न तो कभी धन की माँग करेगा और न ही कभी व्यक्ति विशेष को महान या पूज्य बनाएगा।

अत: हमें असत्य, नकारात्मक और वास्तविकता में भेद करने का ज्ञान होना चाहिए। चैतन्य लहरियों के ज्ञान से, अपनी बुद्धि से जब आपमें यह विवेक विकसित हो जाएगा, जब आप स्वयं को नियन्त्रित कर लेंगे तब आप एकादश की शक्ति बन जाएंगे। ऐसा तभी होगा जब आपमें परिपक्वता स्थापित हो जाएगी।

आज मै आप सबको आशीर्वाद देती हूँ कि आप एकादश रुद्र की शक्तियाँ बनें और आपमें ऐसी निष्कपटता का विकास हो जो आपको उस स्थिति तक पहुँचा दें।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

# गुरु पूजा

## परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन कबैला - 1-8-1999

कबैला में हमने दस वर्ष पूरे कर लिए हैं। आप कल्पना कर सकते है कि इन दस वर्षों में हमने सहजयोग में किस प्रकार उन्नति की। आज हम गुरु पूजा करेंगे। जैसा मैंने बताया, आप सब गुरु हैं और आप अपने गुरु के रूप में मेरी पूजा करना चाहते है। ठीक है। एक चीज़ आपको समझनी चाहिए कि आप गुरु बन गए है। क्योंकि आपमें ज्ञान है, पूर्ण ज्ञान है इसलिए हम कह सकते है कि नि:सन्देह आप गुरु बन गए हैं। आपको समझना होगा कि आप एक ऐसी अवस्था में पहुँच गए है जहाँ आप कुण्डलिनी उठा सकते हैं, अन्य लोगों को साक्षात्कार दे सकते हैं, आप जानते है कि पूर्ण ज्ञान क्या है 'पूर्ण ज्ञान को जान लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसे आत्म-सात कर लेना और भी अधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि हम 'पूर्ण ज्ञान' को जानते है फिर भी अच्छी तरह से आत्मसात करके हम इसे अपना नहीं पाते अर्थात इसकी गहनता में हम नहीं जा पाते इसका क्या कारण है। हमें ये मानना होगा कि हम एक ऐसी कुल परम्परा से आए है जो पशु साम्राज्य थी। पशु साम्राज्य से आप विकसित हुए हैं। इस पशु-परम्परा के बहुत से अवगुण अभी भी हमारे अन्दर बने हुए हैं- जैसे आक्रामकता, प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति, चिड़ाचिड़ापन, भय, छीना-झपटी। ये सब कुल परम्परागत् है और अभी तक हममें बने हुए हैं। हम दूसरों की चीज़े हथियाना चाहते है। आप लोग (सहजयोगी) नहीं, नि:सन्देह नहीं, परन्तु वे लोग जो अभी तक सहजयोग में नहीं है, पहले वे भूमि हथियाया करते थे, फिर वे लोगों पर कब्जा करने लगे, उन्हें गुलाम बनाने लगे और जब इससे भी उनकी तसल्ली न हुई तो उन्होंने साम्राज्य और स्वर्णाभूषण आदि चीज़ें हथियानी शुरु कर दीं। लोगों से छीनने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है फिर भी वे उनसे छीनते हैं। ऐसा करना बहुत अजीब और अमानवीय लगता है। परन्तु वास्तव में ऐसा होता है क्योंकि यही मानव की कुल परम्परा थी। द्वेष जैसे अन्य दुर्गुण भी है जो पशुओं में भी नहीं हैं। पशुओं में इतना द्वेष भाव नहीं होता जितना मानव में है। अपने विचारों तथा प्रतिक्रियाओं के कारण द्वेष भावना हमें उत्तराधिकार में मिली है। ईर्ष्यावश होकर लोग दूसरों को नीचा दिखाना चाहते हैं। वे खुद यदि ऊँचाई प्राप्त नहीं कर सकते तो दूसरों को भी ऊँचाई से नीचे गिराना चाहते हैं। इस प्रकार की ईर्ष्या जब मानव पर अधिकार कर लेती है तो वे सोचते है कि द्वेष वश किए गए सभी कार्य ठीक है। अपनी दुर्बलताओं के प्रति वे चेतन हो जाते है और द्वेष शक्ति के कारण अपने से योग्य व्यक्तियों पर छा जाने का प्रयत्न करते हैं। अब समस्या ये है कि यद्यपि हम मानव है फिर भी हमें क्रोध क्रूरता आदि पाशविक गुण उत्तराधिकार में मिले हैं। हम भी पशुओं की तरह से अशान्त हो उठते

है। परन्तु इसके अतिरिक्त अपनी सोच-विचार के कारण मानव प्रतिक्रिया भी कर सकता है। मानव सोच सकता है और सोचने से उत्तराधिकार में पाए हुए ये दुर्गुण विकृत हो सकते है जैसे व्यक्ति जब किसी दूसरे का पतन चाहता है तो वह स्पष्ट व्यवहार नहीं करता। वह कोई विधि, कोई तरीका इस कार्य के लिए खोजता है। मानव के साथ मुख्य समस्या ये है कि अभी तक भी उसमें उत्तराधिकार में पाया हुआ हिंसक स्वभाव विद्यमान है। इस स्वभाव को वश में किया जाना, इसका ध्यान रखा जाना आवश्यक है। कोई भी ऐसी चीज़ जो आपको पसन्द नहीं है या जो आपकी इच्छा के विरुद्ध है देखते ही आप एक दम से बिगड़ सकते है। अभी-अभी मैने देखा कि कपूर की टिकिया के स्थान पर इन लोगों ने चीनी की टिकिया रखी और उसे ये दिया-सिलाई से जला रहे थे। चीनी की टिकिया आग न पकड़ रही थी। ये लोग कोशिश करते रहे। जब इसने आग नहीं पकड़ी तो मैने कहा मुझे दिखाओ कि ये क्या है। यह चीनी की टिकिया थी यदि कपूर होती तो एकदम से आग पकड़ लेती। इसी प्रकार से मनुष्य के गुण भी जाने जाते है। ज़रा सा उत्तेजित करने से यदि वह भड़क कर क्रोधित हो जाता है तो गुरु के रूप में उसकी स्थिति अभी बहुत अच्छी नहीं है। गुरु के रूप में हमें भड़कना नहीं चाहिए, न ही क्रोधित होना चाहिए। दूसरों को सताने का प्रयत्न भी हमें नहीं करना चाहिए। लोग पूछेंगे कि तब हमें करना क्या चाहिए? हमारे पास एक अन्य तरीका है जिसे हम कहते हैं प्रेम-प्रेम। किसी से नाराज होने के स्थान पर यदि आप उसके प्रति प्रेम एवं करुणा दर्शाएं तो न तो आपको क्रोध आएगा, नहीं दूसरे व्यक्ति के क्रोध से आपका क्रोध बढ़ेगा। किसी पर जब आप नाराज़ होते है तो हो सकता है कि भय के कारण वह आपको मुँह-तोड़ जवाब न दे परन्तु उसके मन में आपके लिए बदले की भावना रह जाएगी। अत: कृपया याद रखें कि सहजयोग में समस्याओं का समाधान करने का एकमात्र रास्ता प्रेम ही है। आश्रम में यदि किसी से कुछ गड़बड़ हो जाती है और आप उस व्यक्ति पर नाराज़ हो जाते है तो उसके मन में भी आपके प्रति दुर्भाव आ जाएगा। यदि वह कोई अच्छा सहजयोगी है तो हो सकता है कि वह सोचे कि दुर्भावना अच्छी नहीं, परन्तु यदि वह अच्छा सहजयोगी नहीं है और अभी तक ये बात समझने के योग्य नहीं तो वह क्या करेगा? तब वह सोचेगा कि इस व्यक्ति ने मेरा अपमान कर दिया है, जान-बूझकर मुझे नीचा दिखाया है, मुझे उससे बदला लेने का प्रयत्न करना चाहिए। पशुओं में ये भावना बहुत सीमित होती है। मेरे विचार से कुछ जानवरों को छोड़कर अधिकतर पशु बदले में विश्वास नहीं रखते। कहते हैं कि साँप को यदि आप चोट पहुँचाएं तो वह पलटकर आप पर झपटेगा। तो बदले की भावना साँप का गुण है। परन्तु क्योंकि हम इन सब योनियों में से निकले है तो हो सकता है इन पशुओं के कुछ गुण अभी तक भी हममें बने हुए हों। हो सकता है हम कभी साँप रहे हों। साँप यदि हमारे अन्दर है तो चोट पहुँचाने वाले को हम जीवन भर याद रखेंगे- इसने मुझे चोट पहुँचाई थी; एक दिन मै इसे ठीक करूँगा, इससे बदला लूंगा- यदि साँप हमारे अन्दर है तब। परन्तु यदि आपमें शेर है तो आप एकदम

क्रूर हो उठेंगे। छोटी सी बात पर आप नाराज़ हो जाएंगे, आप भड़क उठेंगे। यह बहुत अच्छी स्थिति नही है कि अभी तक भी हम पशुओं के स्तर पर है और हमारी कुल परम्पराएं अभी तक हममें गतिशील है। अत: हमें इस पर नज़र रखनी है। हमें अच्छा गुरु बनना है और अच्छे गुरु बनने के लिए आपको अत्यन्त शान्त, करुणामय और प्रेममय बनना होगा। हमें ये समझना होगा कि पाशविक गुण लोगों को उत्तराधिकार में प्राप्त हुए है और यदि आप किसी पर नाराज हो जाते है तो इससे न उसका लाभ होगा न आपका। परन्तु यदि आप प्रेम एवं सुहृदयता पूर्वक उसे बताएंगे कि समस्या क्या है और आप क्या चाहते है तो, मै बताती हूँ, वह व्यक्ति सुधरेगा और आपका प्रेम भी महसूस करेगा। नि:सन्देह कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों को क्षमा करना भी आवश्यक होता है। ऐसे व्यक्ति को पूर्णत: क्षमा कर देना चाहिए। कोई बात नहीं उसने जितनी भी गलतियाँ की हों, उसे क्षमा कर दे। अब भी वह गलतियाँ करता ही चला जाएगा। क्षमा करना अर्थात भूल जाना। फलाँ व्यक्ति दुर्व्यवहार करता है उसे भूल जाएं, पूरी तरह से भूल जाएं। एक गुरु के लिए सहजयोगी गुरु के लिए-बहुत आवश्यक है। यद्यपि अन्य गुरु ऐसे नही थे। वे अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के थे और लोगों पर कुपित हो जाते थे। मै एक बार एक गुरु से मिली। उसने मुझसे कहा, ''माँ आप उनके प्रति बहुत करुणामय है।, इस करुणा के कारण आप अच्छे लोग नही बना सकती। कहने लगा मै ऐसा बहुत कर चुका हूँ। मैने दो व्यक्तियों को गुरु बनाया था, उनमें से एक धन में खो गया और दूसरा स्त्रियों में।'' मैने कहा, ''ठीक है, खो गए सो खो गए। परन्तु अपने प्रेम, स्नेह और करुणा से यदि आप उनका पुनरुद्धार करें तो वे ठीक हो जाएंगे।'' अत: गुरु रूप में आपको निश्चित रूप से यह जान लेना चाहिए कि पूर्व जन्मों के संस्कार अभी तक लोगों में बने हुए हैं।

दूसरी समस्या कही अधिक गम्भीर है क्योंकि मानव में सोचने की शक्ति है। नि:सन्देह पशु भी सोचते है, परन्तु वे बन्धन ग्रस्त होते है और अपने बन्धनों के अनुसार वे आचरण करते है। परन्तु जिस प्रकार मानव में अहं विकसित हुआ है पशुओं में नहीं होता। गुरुओं में भी भयंकर अहं विकसित हो जाता है। जैसा कुछ गुरुओं ने मुझे बताया, पहला अहं इस बात का होता है कि हमने इतना कुछ किया, इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए इतना कठोर परिश्रम किया-हम क्यों अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे? या उन्हें यदि आत्मसाक्षात्कार मिल गया है तो इसके लिए उन्होंने क्या किया? उन्हें आत्म-साक्षात्कार क्यों मिलना चाहिए था? एक प्रकार का मुकाबला हो जाता है कि उन्होंने स्वयं किस प्रकार यह अवस्था प्राप्त की थी और दूसरों ने किस प्रकार प्राप्त की। अपने शिष्यों को सभी प्रकार से सताने और कष्ट देने के तरीके खोजते है उदाहरण के रूप में शिष्य को सिर के बल खड़ा कर देते है, परिवार त्यागने के लिए कहते है, उन्हें पीटते है, लम्बे समय तक पानी में खड़ा कर देते है, एक पैर पर खड़ा कर देते है आदि आदि। इस प्रकार वे उन्हें दण्ड देते है और कभी-कभी तो उन्हें डण्डों और पत्थरों से मारते है। ऐसे है वे लोग। वे बात नहीं करना चाहतें, ये नहीं जानना चाहते कि दूसरे व्यक्ति को क्या

कहना है। न ही ये समझते है कि जिज्ञासुओं से किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। पहले समय में इस क्रोध तथा इस प्रकार की कोई अन्य चीज़ों का महत्व रहा होगा। परन्तु सहजयोग के आगमन के पश्चात् यह सब अनावश्यक है। शिष्यों को शारीरिक दण्ड देना बिल्कुल भी आवश्यक नही। लोग अब भी साधकों को कुछ भी कहने लगते है। मान लो कोई अगुआ किसी जिज्ञासु में कोई कमी देखता है तो कहते लगता है तुम ऐसे हो, तुम्हारे पिता ऐसे थे, तुम्हारे दादा ऐसे थे, परदादा ऐसे थे और तुम भी ऐसे ही हो। उसको चोट पहुँचाने के लिए सभी प्रकार की बातें कहता है। किसी का दिल दुखाकर आप उसका भला नहीं कर सकते, वैसे ही जैसे कहीं चलते हुए यदि आपको चोट लग जाए तो आप चल नहीं सकते। आध्यात्मिक उत्थान में भी यदि आपको चोट लग जाए तो आप आगे न बढ़ पाएंगे। अत: ये आवश्यक है कि साधकों को कभी आहत न करें। यदि आप उनकी भावनाओं को चोट पहुँचाते है तो आप अच्छे गुरु नहीं है। आप शिष्य के प्रति करुणामय और उसकी भावनाओं को समझने वाले नहीं हैं।

सहजयोग में सभी कुछ बिल्कुल भिन्न है क्योंकि आप सबने बिना किसी प्रकार की समस्या के बिना दोष भाव या पाप स्वीकार किए सहजयोग प्राप्त किया है। आप सबको आत्मसाक्षात्कार मिल गया है। किसी को न तो सिर के भार खड़ा होना पड़ा और न ही पति - पत्नियाँ और परिवार त्यागने पड़े। ऐसा कुछ भी नहीं करना पड़ा। जैसे भी कपड़े आप पहनते थे, जो भी बन्धन आपमें थे आपको आत्मसाक्षात्कार दिया गया। यह सत्य है। इसके लिए आपको कोई धन नहीं खर्चना पड़ा, कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी, कुछ नहीं करना पड़ा। जहाँ भी आप बैठे थे वहीं आपकों आत्म साक्षात्कार मिल गया। इस प्रकार की घटना प्रमाणित करती है कि आपमें करुणा की शक्ति है। आपके प्रेम के कारण ही आपको आत्म-साक्षात्कार दिया गया। इस बात को हम महसूस नहीं करते। मान लो हम अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने के लिए उत्सुक है, गाँवों मे जाकर कार्य करते है, ग्रामीणों को आत्म साक्षात्कार देते है क्यों? ऐसा हम किसलिए करते है? प्रसिद्धि के लिए या किसी इनाम के लिए हम ऐसा नहीं करते। अपने हृदय में छिपे प्रेम के कारण हम ऐसा करते है। यह कार्य करने में मुझे क्यों आनन्द आ रहा है? अन्य लोगों को ये आनन्द क्यों नहीं प्राप्त होता? और आप उनकी सहायता के लिए उन्हें आत्म-साक्षात्कार देने के लिए निकल पड़ते है। अब आप महामानव बन गए है। आपको अन्य लोगों की चिन्ता है। दूसरे लोग तबाह हो रहे है, वे गलत मार्ग पर चल रहे है, गलत कार्य कर रहे है। यह बात आपको परेशान कर देती है और आप उनकी सहायता करना चाहते है। एक बार जब आपमें ये सूझ बूझ आ जाती है तब आप समझते है कि जिस व्यक्ति से आपने गुरु रूप में व्यवहार करना है उससे कैसे आचरण करें? प्राय: उस व्यक्ति को कोई भी कठोर बात कहनी अनावश्यक होती है। अधिक से अधिक आप उसे बता सकते है कि क्या गलतियाँ हुई। परन्तु यह कार्य भी अत्यन्त विनम्रता पूर्वक किया जाना चाहिए

ताकि उस व्यक्ति को आघात न पहुँचे। किसी को यदि अपने परिवार से, पत्नीसे, पति से, बच्चों से या किसी अन्य चीज़ से बहुत लगाव है और सहयोग में आकर भी उनका ये मोह बना हुआ है तो भी ठीक है कोई बात नहीं। परन्तु इस मोह में फँसे रहकर वे कहाँ तक उन्नत होंगे, कहाँ तक यह चलता रहेगा, यह सोचने की बात है। आपको निर्लिप्त होना चाहिए। मै यदि कहूँ कि आप ऐसा नहीं कर सकते कि यह एक अवस्था है? निर्लिप्सा मस्तिष्क की एक अवस्था है, परन्तु इसमें भी जब उनके लिए कुछ करने का समय आता है तो आप जी जान से उनकी सहायता करते है परन्तु आप लिप्त व्यक्ति नहीं होते।

**लिप्त व्यक्ति की क्या परिभाषा है? मोह में फँसा व्यक्ति सदैव दूसरों की चिन्ता करता है** और उन्हीं के बारे में सोचता रहता है। सहयोग के विषय में नहीं सोच सकता। जिन लोगों के मोह में फँसा हुआ है उन्हीं के विषय में सोचता है। ऐसा व्यक्ति बहुत संवेदनशील होता है। आप उसके भाई बहनों आदि से कुछ नहीं कह सकते; ऐसा यदि किसी ने किया तो वह एकदम से उछल पड़ता है। नाम के साथ भी मनुष्य को मोह होता है। मान लो किसी ने कोई नाम कमा लिया है या बड़ा पद पा लिया है। तब वह क्या करता है? आप किसी भी तरह उसे उसे चुनौती नहीं दे सकते, किसी भी प्रकार से नहीं क्योंकि वह उससे इतना लिप्त होता है। कि वह स्वयं को बहुत महान मानता है ऐसा महान व्यक्ति जिसने जीवन में बहुत बड़ा पद पा लिया हो अपने गुरु से भी वह आशा करता है कि उसकी लिप्साओं का वह सम्मान कर ऐसी समस्या का आप किस प्रकार समाधान कर सकते है? मान लो कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से बहुत लिप्त है ऐसे व्यक्ति से आप उस विषय पर कोई बहस न करें क्योंकि अभी वह उन्नत हो रहा है और शनैः शनैः उस अवस्था तक पहुँच जाएगा। ऐसा व्यक्ति अभी पूर्ण सहजयोगी नहीं है। यदि वह अपनी पत्नी से बहुत लिप्त है तो आपने क्या करना है, होने दें; परन्तु परम-चैतन्य इस कार्य को करेगा और आप महसूस करेंगे कि जो भी कुछ वह सोचता था, जो भी निर्णय वह लेता था सब कुछ गलत है। जब वह व्यक्ति स्वयं इस बात को जान जाएगा तब वह निर्लिप्त हो जाएगा। परन्तु यदि आप उसे बताते रहेंगे उससे बहस करते रहेंगे तो कोई लाभ न होगा। अतः हमें समझना है कि जिस प्रकार मानव रूप में हममें कमियाँ थी सहजयोगी होकर भी हममें कुछ कमियाँ है इन समस्याओं को धीरे-धीरे समाप्त होना है। वाद-विवाद, कहने सुनने से यह कार्य न होगा। प्रेम एवं करुणा से होगा। आपको यदि किसी से प्रेम है तो, आप हैरान होंगे, 99 प्रतिशत लोग प्रेम को मानते है। मैं कहूँगी, कि यह मानव का तीसरा गुण है।

**मानव का प्रथम गुण कुल परम्परागत संस्कार है, दूसरा गुण उसकी विचार शक्ति है और तीसरा प्रेम का सम्मान करना है।** कोई व्यक्ति यदि प्रेम करता है तो दूसरा प्रेम के मूल्य को समझता है क्योंकि वह सोचता है कि यह व्यक्ति मुझे प्रेम कर रहा है; मेरे वैभव, सौन्दर्य आदि चीज़ों को नहीं, मुझे प्रेम कर रहा है। प्रेम का यह विचार उसे उस व्यक्ति से

सहज में ही पूर्णत: निर्लिप्त कर देगा, कैसे? यह बड़ा अजीब लगता है कि आप किसी से प्रेम करें और उससे निर्लिप्त हो जाएं। ऐसा केवल सहजयोग में ही सम्भव है। सहजयोग में आपकी मानसिक स्थिति ऐसी होती है कि आप पूर्णत: निर्लिप्त होते हैं- पूर्णत: निर्लिप्त। कैसे? उदाहरण के रूप में मेरी बेटियाँ है उनसे मै निर्लिप्त हूँ। मै उन्हें कभी टेलिफोन नहीं करती, उनकी चिन्ता नहीं करती क्योंकि सहजयोग में आप जानते हैं कि वह व्यक्ति किस हाल में है। चैतन्य-लहरियाँ यदि ठीक है तो क्यों आप टेलिफोन करें? क्यो उनसे बातचीत करें? किसलिए आप कुछ पूछें? कोई आवश्यकता नहीं। चैतन्य लहरियों से आप जान सकते है कि व्यक्ति का क्या हाल है। आपको लगेगा कि आप पूरी तरह निर्लिप्त हैं। यदि चैतन्य लहरियाँ कुछ गम्भीरता को बताएंगी तब आप क्या करेंगे? आप अपना पूरा चित्त उस व्यक्ति पर डालेंगे। आप अपना चित्त डालेंगे उससे लिप्त नहीं होंगे। अत: मोह से समस्या का समाधान नही होता। चित्त समस्या का समाधान करता है। परन्तु जब आप निर्लिप्त नहीं होते तब आपका चित्त भी 'लिप्त चित्त' होता है। यह ऐसा चित्त है जिसका लाभ सबको नहीं हो सकता। यह चित्त अटक जाता है, जिस व्यक्ति से आपको मोह है उस व्यक्ति पर पूरी तरह से अटक जाता है। समझने का प्रयत्न करें। किसी व्यक्ति विशेष से एकाकारिता (मोह) उस व्यक्ति पर चित्त डालना नहीं होता। निर्लिप्सा की स्थिति जब आप प्राप्त कर लेगे तब आपका चित्त कार्य करेगा। तब किसी भी ज़रूरतमन्द व्यक्ति पर जब आप चित्त डालेंगे तो वह कार्य करेगा। परन्तु लिप्सा के कारण यदि आप अपने चित्त को हर समय एक ही व्यक्ति पर व्यर्थ करते है तो आपका चित्त थक जाएगा और प्रभावहीन हो जाएगा। यह मै कहूँगी, एक प्रकार से विरोधाभास (Paradox) है कि यदि आप किसी व्यक्ति विशेष से लिप्त है तो आपका चित्त कार्य नहीं करता और यदि आप उससे निर्लिप्त है तो चित्त सारा कार्य करता है। मुझे प्रवचन देना है, ठीक है मै प्रवचन दे रही हूँ, मुझे खाना बनाना होगा तो मै खाना बनाऊँगी। परन्तु हर समय उस कार्य या व्यक्ति के विषय में सोचना, मानसिक रूप से उससे जुड़े रहना आवश्यक नहीं है। वह व्यक्ति, ठीक है, परन्तु हर समय उसकी चिन्ता करने की क्या बात है? आखिरकार आपने सहजयोग करना है, और बहुत से कार्य करने है, बहुत से लोगों की कुण्डलिनी जागृत करनी है, किसी एक व्यक्ति से लिप्त होना आपके लिए अच्छी बात नहीं है। इस प्रकार के मोह से आपका चित्त बेकार हो जाता है, बिल्कुल बेकार। अत: चित्त को स्वतन्त्र रहने दें, मोह के बन्धनों में इसे न जकड़ें। चित्त को पूर्णत: स्वतन्त्र होना चाहिए। तब यह स्वत: कार्य करता है।, स्वत:, और आप हैरान होंगे कि आपके चित्त डाले बिना भी चित्त कार्य को कर देगा। ऐसा आध्यात्मिक चित्त, जो प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, प्राप्त कर लेना, अत्यन्त महान उपलब्धि है। यह कार्य करेगा और उसकी कार्यशैली पर आप हैरान हो जाएंगे। यह एक दूसरा संसार है जिसके विषय में मै आपको बता रही हूँ, यह भौतिक संसार नहीं इससे कहीं ऊँचा संसार। जब आपका चित्त इतनी सुन्दरता से कार्य करता है तो आप आश्चर्य चकित हो जाते

है कि किस प्रकार इसने कार्य किया। परन्तु अपनी लिप्साओं द्वारा आप इसे बाँधें नहीं। चित्त यदि बंधा हुआ है तो यह अत्यन्त सीमित क्षेत्र में कार्य करेगा- केवल उन्हीं लोगों पर जिनसे आप जुड़े हुए है या जो आपसे जुड़े हुए हैं। अत: निर्लिप्सा के आधार पर ही गुरु की पहचान होती है।

मान लो दस शिष्य है और एक गुरु। गुरु उनमें से एक को पसन्द करता है। वह सोचता है कि यही शिष्य सर्वोत्तम है और इसी को सारा प्रोत्साहन और हर सम्भव सहायता दी जानी चाहिए। इस प्रकार उसका कोई लाभ न होगा। इसके विपरीत गुरु को कहना चाहिए कि तुम तो पहले से ही बहुत अच्छे हो, काफी उन्नत हो और काफी गहन हो। तुम उन लोगों पर चित्त डालो जो अभी इतने अच्छे नहीं हैं, उनसे इस विषय पर बात करो कि उन्हें अत्यन्त मधुरता पूर्वक उन्नत होना है। आपको उन लोगों से बातचीत करनी है जो अभी तक उस स्थिति तक नहीं पहुँचे या उनसे जो अभी तक संघर्ष कर रहे हैं। आपको समझना है, देखना है कि वे क्या कर रहे हैं? क्या कारण है कि उनके चित्त उन्नत नहीं हो रहे हैं; सुधर नहीं रहे हैं। समस्या क्या है और क्यों चैतन्य लहरियाँ उनमें से नहीं बह रही हैं। इस कारण जो आपको मिलेगा वह यह है कि लोग हर समय अपने चित्त को एक ही व्यक्ति पर संकेन्द्रित किए रखते हैं। ऐसा करना वे अपनी जिम्मेदारी मानते हैं। इसे उचित ठहराते हुए वे कहते है कि स्वाभाविक रूप से मुझे उनके लिए चिन्तित होना पड़ता है। यह मात्र तर्कसंगत ठहराना है। परन्तु यदि आप अपने चित्त को किसी एक व्यक्ति या किसी एक समूह पर संकेन्द्रित नहीं करते तो आपका चित्त पूरे विश्व की देखभाल करता है। यह सारी सूचना प्राप्त करता है और सारी सूचना देता भी है कि स्थिति को सुधारने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

अत: व्यक्ति को उस अवस्था तक उन्नत होना है जहाँ आप क्रोधित न हों और न ही परेशान हों -- बिल्कुल भी नहीं। ऐसी स्थिति में आप स्थिति की नाजुकता को देखकर भी उसमें लिप्त नहीं होते। स्थिति को देखकर भी उससे ऊपर होते हैं। तब आप बेहतर तरीके से समस्या का समाधान कर सकते हैं परन्तु यदि आप स्वयं उस समस्या के अंग प्रत्यंग बन जाएंगे तो उसका समाधान न कर सकेंगे। मै आपको बतादूँ कि झगड़े में लिप्त लोग इसको सुलझा नहीं सकते, परन्तु जो व्यक्ति इसमें लिप्त नहीं है वह इसको सुलझा सकता है। ये समझना बहुत सहज है कि यदि आप किसी चीज़ से लिप्त है, किसी व्यक्ति से, किसी वस्तु विशेष से जुड़े हुए हैं तो आप खो जाते हैं।

अत: हमारे चित्त को सदैव निर्लिप्त होना चाहिए ताकि जहाँ भी आवश्यक हो इसे विस्तृत रूप से उपयोग किया जा सके। व्यक्ति को इसी अवस्था तक पहुँचना होता है। आप यदि इस मानसिक अवस्था तक पहुँच जाते है तो सब कार्य हो जाते है। अब इसे किस प्रकार पाया जाए? केवल अन्तर्दर्शन द्वारा। अन्तर्दर्शन द्वारा आप समझ जाएंगे कि समस्याओं के समाधान के लिए आपको क्या सहायता चाहिए। पहली समस्या ये है कि स्वयं का सामना किस प्रकार करें? क्योंकि इसके विषय में आप थोड़े से संकोचशील और आशंकित होते है। समय के

साथ साथ, आप जान जाएंगे कि यह आशंका अर्थहीन है। जान-बूझकर जब आप इसका आयोजन करेंगे तो यह कार्य नहीं करेंगी। परन्तु इसके विषय में यदि आप सहज है तो यह कार्य करेगी।

चित्त के अलावा दूसरी बात ये है कि हमें सभी कुछ परम चैतन्य के हाथों में छोड़ देना चाहिए। परम चैतन्य को सभी समस्याओं का समाधान करने दें। परम-चैतन्य को समस्याएं सुलझाने दें। हम समस्याओं की चिन्ता न करें तो निर्लिप्सा आती है। आप सभी कुछ परम-चैतन्य पर छोड़ देते है, स्वयं इसमें नहीं फँसे रहते, इनसे दूर होते है। बहुत-बहुत छोटी-छोटी चीज़ें है। जिन्हें जान लेना आवश्यक है। हम कष्ट उठाते है क्योंकि हर आदमी स्वयं को हमारे लिए जिम्मेदार मानता है। हर आदमी सोचता है कि वह जिम्मेदार है, हमारे लिए यह जिम्मेदारी उसने निभानी है। ये सब चीज़ें लोगों को परेशान करती है और यही कारण है कि हमारा समाज अत्यन्त जटिल है। लोग ऐसे रोगों से पीड़ित है जिनका कारण अधिक सोच है। हर समय सोचते रहने से, आप कहीं भी नहीं पहुँचते। ऐसे क्षण में क्या करना चाहिए? सभी कुछ परम चैतन्य के हाथों में छोड़ देना चाहिए। ये यदि परम चैतन्य के हाथों में चला जाता है तो परम चैतन्य इनका संचालन करेंगा और समस्याओं का समाधान करेगा।

मै आपको एक अनुभव बताती हूँ इस बार जब मै अमेरिका में थी तो वहाँ पूजा के लिए पहुँची। मैंने कहा उन्हें पूजा के लिए आने दें; अच्छा होगा यदि वे पूजा के लिए आएं। वे मुझसे कहने लगे श्री माताजी पूजा के अवसर पर हम आपके लिए उपहार लाना चाहते हैं। किस प्रकार हम ये उपहार लाएं? मैंने कहा, ''बहुत आसान बात है कि उपहार न लाएँ'' परन्तु उन्हें ये बात स्वीकार्य न थी। कहने लगे कि हमें उपहार लाने है। परन्तु कस्टम वाले हमें परेशान करेंगे। तो वहीं पर एक इमारत थी जिसमें निकासी विक्रय (liquidation sale) किया जा रहा था। मैंने कहा यह बहुत अच्छी बात है एक नज़र इस पर मार लें। मैं अन्दर गई तो देखा कि चीज़े इतनी सस्ती थी कि विश्वास नहीं होता था- बड़ी बड़ी महँगी चीज़ें कौड़ियों के दाम। मै हैरान थी कि ऐसा कैसे हो सकता है मैंने उनसे कहा मै ये सारी चीज़ें खरीद सकती हूँ। परन्तु आपको ये सब कन्ना जोहारी लानी पड़ेगी। वे मान गए और खूबसूरती से पैक की हुई चीज़ों को कन्नाजोहारी ले आए और सहजयोगियों को दे दिया। कस्टम आदि की हमें कोई समस्या न हुई, उसका भुगतान भी हमने नहीं किया। प्रेम ही सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है यह समझ लेने मात्र से काफी सुधार हो सकता है। प्रेम ही सत्य है और सत्य ही प्रेम है तो उसके साथ किया हुआ आचरण बिल्कुल स्पष्ट होगा क्योंकि यह सच्चा है। जो भी बात आप उससे कहेंगे वह बिल्कुल स्पष्ट होगी क्योंकि यह पूर्णत:सच है। **तो व्यवहार में आपको अत्यन्त सच्चा होना चाहिए। नि:सन्देह आपको ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे आपको आघात पहुँचे।** परन्तु ऐसी विवेकशील विधियाँ अपनानी चाहिए कि किसी और को भी आघात न पहुँचे। इस प्रकार वह व्यक्ति प्रभावित होगा। सहजयोग में अब हमें ऐसे गुरुओं की ज़रूरत है क्योंकि

सहजयोग अब बहुत फैल चुका है। **अत: सर्वप्रथम हमारा क्रोध वश में लाया जाना आवश्यक है। क्रोधित होना किसी गुरु-सहज गुरु - का कार्य नहीं है।** सहजयोगी यदि वास्तव में ऐसे बन जाएं तो हमारी बहुत सी चिन्ताएं दूर हो जाएंगी। बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाएंगा, बहुत सी गड़बड़ी समाप्त हो जाएंगी। समस्याएं बहुत आसानी से सुलझ जाएंगी परन्तु सबसे पहले हमारे अन्दर शुद्ध प्रेम होना आवश्यक है। किसी लाभ या इनाम के लिए नहीं। सच्चा प्रेम यदि हममें है तो हम जो भी कार्य करना चाहेंगे उसे बहुत आसानी से कर सकेंगे। यह सदैव चलने वाली चीज़ है क्योंकि गुरुओं को जानना होगा कि उनके कर्तव्य क्या है और उनके गुरु होने का क्या तात्पर्य है? गुरु पद बहुत महत्वपूर्ण है और इस पद का उपयोग अपने शिष्यों तथा सहसाधुओं के लिए गहन सूझ-बूझ का प्रदर्शन करते हुए करना चाहिए। उनका उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए ताकि लोग गुरु पर सन्देह न कर सकें, ये न सोचें कि वह कोई कार्य क्यों कर रहा है। यह रहस्य नहीं होना चाहिए, बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए। मैं आज यह सब चीज़ें आपको इसलिए बता रही हूँ कि आज कबैला में हमने दस वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। कबैला मेरे प्रति बहुत प्रेममय रहा। यहाँ बहुत से लोग सजहयोग में आए। यह बहुत दूर दराज का स्थान है। लोग यहाँ आने से कतराते थे और कहते थे कि आप कहाँ रहने के लिए जा रहे है? परन्तु यहाँ पर सभी कार्य हुआ और यह इस चीज़ को दर्शाता है कि सहजयोग चमत्कारिक रूप से कार्य करता है। **परन्तु चैतन्य लहरियों का ज्ञान मुख्य चीज़ है। यदि आपको चैतन्यलहरियों का ज्ञान नहीं हैं तो आप कुछ नहीं कर सकते।** उदाहरण के रूप में जब पहली बार मै कबैला आई तो किसी ने मुझे बताया कि श्री माताजी बहुत ही वीरान जगह है। आस-पास माफ़िया के लोग है। वहाँ केवल छ:-सात घर है। आप कहाँ जा रही है। ये क्या है? सभी ने मुझे चेतावनी दी। मै यहाँ आई और तुरन्त उन्हें बताया कि मै ये स्थान खरीद रही हूँ। कल इसके लिए पैसा दे दूँगी। वे सब हैरान थे ! आप ऐसा कैसे कर सकती है? मैंने कहा चिन्ता मत करो, सब कुछ बिल्कुल ठीक है, चैतन्य लहरियों पर सब ठीक है यद्यपि सभी लोग मुझे रोक रहे थे और उस स्थान की बड़ी भयानक तस्वीर मुझे दिखा रहे थे। परन्तु अब कहाँ है वो माफ़िया? सब गया। सच्चाई को जानने के लिए आपको ध्यान धारणा करनी होगी और अपनी अन्तर्दृष्टि को सुधारना होगा। दृष्टि अत्यन्त स्पष्ट होनी चाहिए। आपकी अर्न्तदृष्टि ऐसी हो जो किसी वस्तु विशेष के विषय में आपके पूर्व विशेष विचार न दर्शाए। यह अत्यन्त स्पष्ट दृष्टि होनी चाहिए।

सहजयोग में व्यक्ति को समझना है कि देवी की सुरक्षा उसके सिर के तालू भाग में है। आपको कोई परेशानी नहीं हो सकती, कुछ नहीं हो सकता। मुझे विश्वास है कि सभी कुछ कार्यान्वित हो जाएगा आप-स्वयं-इसका अनुभव करेंगे। सहजयोग के विषय में इस प्रकार बातचीत करते हुए आप केवल ध्यानगम्य हो जाएं। केवल ध्यानगम्य हो जाएं और आप महसूस करेंगे कि एक दिन आप सभी ध्यानगम्य अवस्था में ही पहुँच जाएंगे और यह ध्यानगम्य स्वभाव

ही वह अवस्था है जिससे चैतन्य-लहरियाँ बहती हैं। यह चैतन्य-लहरियाँ छोड़ती है और आपके लिए, आपके कार्य के लिए आपके जीवन के लिए, हर चीज़ के लिए मार्ग बनाती है। किसी से आपको संघर्ष नहीं करना पड़ता, किसी से झगड़ा नहीं करना पड़ता, किसी से वाद विवाद नहीं करना पड़ता। ध्यान धारणा द्वारा उस अवस्था को प्राप्त करने का प्रयत्न करें जिसका वर्णन मै आपके सम्मुख कर रही हूँ, जिसमें प्रेम एवं स्नेह से आप पूर्णत: घिर जाते है।

परमात्मा आप सबको आशीर्वादित करें। एक और बात को समझ लेना भी आवश्यक है कि आप सभी चीज़ों की अति में न जाएं। अति में जाना भी मानवीय गुण है। उदाहरण के रूप में यदि वे तर्कसंगत है तो हर चीज़ को तर्कसंगत ठहराते चले जाते है। मै ऐसा नहीं कर सकता, मै वैसा नही कर सकता, ये ही होता रहता है। इसका दूसरा पक्ष ये है कि वे इतने भावुक हो जाते है कि भावनात्मकता के नाम पर गलत कार्य करने लगते है। इन दो चीज़ों पर आपको काबू पाना होगा। इन पर यदि आप काबू नही पा लेते तो स्वयं को सहजयोगी कहने का क्या लाभ है? **इतनी उपलब्धि तो आपके लिए कम से कम है कि आप अति में जाना बिल्कुल छोड़ दें।** स्वयं पर दृष्टि रखें। आप यदि अति में जाते है तो कुछ भी कार्यान्वित न होगा। आपको कैंसर हो सकता है या कोई अन्य भयानक रोग। दूसरी ओर आप बहुत अधिक तर्कसंगत व्यक्ति बन सकते है। परन्तु सहजयोग आपकी खोपड़ी में न घुसेगा। अत: हर समय आपको सन्तुलन बनाए रखना है और उस सन्तुलित अवस्था में मान लो किसी सहजयोगिनी ने कोई बड़ी गलती की है तो आपको भावनावश उससे सहानुभूति नहीं करनी। '' श्री माताजी इसमें क्या हानि है? हमें उसे क्षमा कर देना चाहिए।'' नहीं, आपको उसे बताना चाहिए कि अपनी चैतन्य लहरियों को सुधारो और सन्तुलन प्राप्त करो। जब तुम सन्तुलित हो जाओगी तब मै तुम्हारे बारे में सोचूंगा और बताऊंगा। परन्तु यदि उस महिला में सन्तुलन नहीं है, तर्क करती है, भावनाओं में बहती है तो ये भावावेश आपको गलत दिशा में ले जा सकते है तब यह मात्र मानसिक समस्या है। मानसिक रोग की स्थिति में भी लोग भावना वश होकर बहुत सी गलत चीज़ें कर सकते है। जैसे अत्यन्त संवेदनाशील (Neurotic) गाने गाना। यह सब भावनात्मक चीज़ें आपको कहीं भी ले जा सकती है। अत: बहुत ज्यादा भावनात्मक होने की ज़रूरत नहीं है। आपको प्रेम करना चाहिए और अति की दूसरी सीमा, बाई ओर के पतन, से बचना चाहिए। एक ओर भावनात्मक है और दूसरी ओर तर्कसंगत। तर्कसंगति में आप किसी भी चीज़ को उचित ठहराने में लगे रहते है जैसे हिटलर ने किया। उसने कहा नहीं, यही ठीक है, जो मै कर रहा था वही ठीक है। उसके मस्तिष्क में एक बात आ गई तो यह उसकी तर्कसंगति के परिणाम है। अत: दोनों ही चीज़ों को ठीक से सन्तुलित किया जाना चाहिए। और आपको देखना चाहिए कि जो भी कुछ आप कर रहे है उससे आपको वांछित परिणाम भी मिल रहे है?

आप सबको बारम्बार धन्यवाद, परमात्मा आप को धन्य करें।

# श्री कृष्ण पूजा–कबैला (5-9-99)

## परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम श्री कृष्ण की पूजा विराट रूप में करेंगे। सर्वप्रथम श्री कृष्ण अवतार को समझ लेना आवश्यक है। 'कृष्ण' शब्द का उद्भव 'कृषि' शब्द से है – कृषि अर्थात् खेती। उन्होंने आध्यात्मिकता के बीज बोए और इसके लिए सर्वप्रथम उन्हें सोचना पड़ा कि "हमारी आध्यात्मिक स्थिति क्या है? हमारी आध्यात्मिक भूमि कैसी है? **श्री राम के समय में उन्होंने बहुत सी मर्यादाएं बनाई थीं** और लोग इन मर्यादाओं के विषय में सोचने लगे थे कि मुझे यह कार्य नहीं करना चाहिए, मुझे वैसा नहीं करना चाहिए।" यह सब मात्र मानसिक बन्धन थे, ऐसा करना न तो स्वाभाविक था और न सहज। परिणाम स्वरूप लोग अत्यन्त गम्भीर हो गए। वे न तो ज्यादा बातचीत करते थे, न हँसते थे और न ही किसी चीज़ का आनन्द लेते थे। अत: सर्वप्रथम श्री कृष्ण ने निर्णय किया कि वे लोगों को इन बन्धनों से मुक्त करेंगे और इस तरह से ये बन्धन समाप्त करेंगे कि लोग परस्पर आनन्द प्राप्त कर सकें। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के तीन मार्ग थे सर्वप्रथम उन्होंने कहा कि आत्मानुभव (आत्मसाक्षात्कार) प्राप्त करके स्थितप्रज्ञ बन जाओ-सभी प्रलोभनों, अहम्, सभी बन्धनों से मुक्त होकर स्थित प्रज्ञ बन जाओ। स्थित प्रज्ञ स्थिति में व्यक्ति सर्व साधारण लोगों की तरह से नहीं सोचता और न ही सामान्य व्यक्ति की तरह भौतिक पदार्थों की तरफ़ आकर्षित होता है। ऐसा व्यक्ति पूर्णत: निर्लिप्त होता है उसे न तो कोई शिकायत होती है और न ही कोई ईर्ष्या। श्री कृष्ण ने यह सब बताया परन्तु उन्होंने इस स्थिति को प्राप्त करने की विधि कभी नहीं बताई। दूसरी चीज़ जो उन्होंने बताई कि मानवीय प्रकृति के कारण आपको कर्म तो करना होगा परन्तु इस कर्म का फल परमात्मा के चरण कमलों में या दिव्य शक्ति पर छोड़ देना चाहिए। यह उनकी एक अन्य चाल थी क्योंकि वे जानते थे कि मानव में कितना अहम् है और मानव को किस प्रकार चलाना है। मनुष्य को यदि आप कोई बात सीधे से बताएं तो वे किस प्रकार इसका गलत अर्थ लगाता है। अत: श्री कृष्ण ने जटिल मार्ग अपनाया कि लोगों को कुछ अटपटी चीज़ बताई जाएं। कोई भी कार्य जब आप करते हैं तो अहम् के कारण उसे परमात्मा के चरण कमलों में समर्पित नहीं कर सकते। ऐसा करना असम्भव है। अत: उन्होंने एक असम्भव स्थिति की सृष्टि की ताकि कुछ समय पश्चात् लोग यह महसूस कर सकें कि ऐसा नहीं हो सकता और परमात्मा के चरण कमलों में किसी चीज़ को छोड़ने का विचार त्याग दें। इस प्रकार उन्होंने भूमि तैयार की। एक अन्य चीज़ जो उन्होंने कही, "पुष्पम फलम तोयम्।" फूल, फल या जल जो भी कुछ आप मुझे अर्पण करेंगे मैं इसे स्वीकार करूँगा। परन्तु ऐसा करते हुए आपके हृदय में मेरे प्रति अनन्य

भक्ति होनी चाहिए। अनन्य अर्थात् जिसमें कोई अन्य न हो - पूर्ण। यह स्थिति तो केवल आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् ही सम्भव है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही आप अपने कर्मफल परमात्मा के चरण कमलों में समर्पित कर सकते है और केवल आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही आप अनन्य भक्ति प्राप्त कर सकते है। मानव के जटिल स्वभाव होने के कारण उन्होंने यह अटपटी शर्त मानव के लिए बना दी। बहुत से लोग मुझे बताते है कि श्री माताजी हम अनन्य भक्ति कर रहे है। कैसे? क्योंकि हम गलियों में गाते फिरते है; हर समय परमात्मा का नाम लेते है, फटे पुराने कपड़े पहनकर पन्ढारपुर जाते है और एक महीना पैदल चलते है और गाते रहते है। भक्ति के विषय में उन्होंने इस प्रकार मूर्खता पूर्ण विचार कभी नही बताए। वे तो भक्ति के विषय में मानव के मूर्खतापूर्ण विचारों को दूर करना चाहते थे। अनन्य भक्ति तो केवल आत्मसाक्षात्कार के पश्चात्, ही सम्भव है, केवल उस स्थिति में जब आपके और परमात्मा के अतिरिक्त कोई न हो। इस प्रकार उन्होंने मनुष्य और उसकी मूर्खताओं पर तीन ओर से आक्रमण किया क्योंकि उन्होंने सोचा कि मानव को यदि सीधे से कहा गया कि ऐसा करो, ऐसा मत करो तो वे कहेंगे कि हमने ऐसा किया परन्तु हमें कुछ प्राप्त नहीं हुआ। भारत में एक पंथ है जो पन्धर पुर जाते हैं; फटे पुराने कपड़े पहनकर एक महीने तक चलते रहते है, भजन गाते हुए मार्ग पर जहाँ भी जैसा मिलता है खा लेते है। वे सोचते है कि यह अनन्य भक्ति है, परन्तु उन्हें कुछ प्राप्त नही होता। ऐसे लोग अस्वस्थ एवं दुर्बल हो जाते है और उनकी वृद्धावस्था दयनीय हो जाती है। परन्तु उन्हें कौन समझ सकता है? वो तो इसमें खो चुके है। अतः लोगों को मार्ग पर लाने का यह उनका तरीका था। बहुत से लोग मेरे पास आकर बताते है कि श्री माताजी हम श्री कृष्ण की इतनी भक्ति करते है परन्तु हमें कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।

तो श्री कृष्ण ने कृषि के लिए भूमि तैयार की, हम कह सकते है कि वह एक महान कृषक थे इसीलिए 'कृषि' से उनका नाम कृष्ण पड़ गया। उनके विषय में मैंने आपको बहुत सी बातें बताई है कि उनका नाम कृष्ण कैसे पड़ा, राधा कौन थी, कृष्ण कौन थे आदि आदि। परन्तु जब उन्होंने ये सब बातें बताई तो उन्होंने कहा कि आप स्थित प्रज्ञ बनें। इसे ज्ञान योग कहा गया। ज्ञान योग-अर्थात् पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना। परन्तु उन्होंने ये नही बताया कि इसे किस प्रकार प्राप्त करें। यह बात तो आप जानते है कि पूर्ण ज्ञान क्या है। सहजयोग में इसे आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर सकते है। श्री कृष्ण की एक अन्य विशेषता ये थी कि उन्होंने लोगों में विवेक की सृष्टि की। उन्होंने सोचा कि मूर्खता पूर्ण ढंग से कार्य करते हुए लोगों में विवेक उत्पन्न हो सकता है, कि इस प्रकार कुछ प्राप्त न होगा; कुछ प्राप्त करने के लिए तो आत्मसाक्षात्कार आवश्यक है। आज जब हमारे सामने एक चुनौती है कि नई सहस्राब्दि में यह विश्व नष्ट हो जाएगा तथा ऐसी और बहुत सी बातें जो लोग कह रहे है, तो अच्छा क्या है और बुरा क्या है इसे विवेक द्वारा समझ लेना बहुत आवश्यक है। किसी चीज़ को हम बहुत

अच्छा कहते है और किसी चीज़ को बुरा। परन्तु दिव्य विवेक बहुत भिन्न है और स्वयं कार्य करता है एक बार जब आप दिव्य विवेक के साम्राज्य में आ जाएंगे तब आप चाहते हुए भी गलतियाँ न कर सकेंगे। मै आपको अपना उदाहरण दूंगी। हम एक घर खरीदने के लिए गए और उसे बेचने वाला एक भिखारी की तरह से था। वह आया और कहने लगा हमारे पास कुछ नहीं है, खाना तक भी नही है। हमारी सारी चीज़े छीन ली गई है और भूखे मरने के लिए छोड़ दिया गया है। उसने जब ये बात कही तो मुझे उस पर दया आई और मैंने कहा कि ठीक है इसकी कीमत कुछ और बढ़ा दीजिए। हमने कीमत बढ़ा दी फिर भी वह कहे जा रहा था नही नही इसे और बढ़ाइए। न चाहते हुए भी मेरे पति ने दो बार कीमत बढ़ाई तीसरी बार फिर बढ़ाई, परन्तु उसकी सन्तुष्टि नही हुई। तुरन्त विवेक ने कार्य किया और मैंने बताया ये पाखण्डी है। मै आकर कार में बैठ गई। मुझे लगा कि खरीदने के लिए यह कोई इतना अच्छा स्थान भी नही है केवल करुणा के कारण मै इसे खरीद रही हूँ। परन्तु करुणा से भी ऊपर यह दिव्य विवेक है जिसने मुझे बताया कि इस सौदे को छोड़ दो। तो यह दिव्य विवेक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमे देखना चाहिए कि यह किस प्रकार कार्य करता है और इससे सन्तुष्ट होना चाहिए। अवसर खो देने का दुख हमें नही होना चाहिए। इसके विपरीत हमें प्रसन्न होना चाहिए कि ऐसा घटित हुआ और हमारे दिव्य विवेक ने सब सम्भाल लिया। कई बार ऐसा लगता है कि दिव्य विवेक में किया गया काम गलत है, आपने कोई गलती कर दी है। परन्तु यदि ये दिव्य विवेक में किया गया है तो यह अच्छा साबित होगा।

दिव्य विवेक हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें जीवन का, सहजयोग का वास्तविक आनन्द प्रदान करता है। अत: तीसरी बात जो श्री कृष्ण ने की वह थी लोगों को प्रसन्न एवं आनन्दमय बनाना। परन्तु उनकी समझ में यह नहीं आया कि श्री राम की मर्यादाओं के रहते किस प्रकार ऐसा किया जाए। तो लोगों को आनन्द देने के लिए उन्होंने कहा आओ नृत्य करें, गीत गाएं, होली खेलें आदि-आदि। इन चीज़ों से उन्होने ऐसी प्रथाओं का आरम्भ किया जो बहुत गम्भीर न थी और देखने में उथली प्रतीत होती थी परन्तु इनके माध्यम से आनन्द की अभिव्यक्ति होती थी। उन्होंने यह बताने का प्रयत्न किया कि स्थित प्रज्ञ, सहजयोगी या आत्मसाक्षात्कारी का चीज़ों के प्रति क्या दृष्टिकोण होना चाहिए। आप लोगों में स्वत: यह दृष्टिकोण बन जाता है। सहज अवस्था में आप हर चीज़ का आनन्द लेते है। वे लोगों में आनन्द की यही संवेदना उत्पन्न करना चाहते थे। उनके जीवन की इन गतिविधियों की बहुत से आलोचकों ने आलोचना की है। आलोचकों के अनुसार धर्म का अर्थ यह है कि बीस साल की आयु में ही आप अस्सी साल के वृद्ध की तरह से व्यवहार करने लगें। कितनी बेवकूफी है। श्री कृष्ण ने सदैव आनन्द की बात की, त्याग और विरक्ति की नहीं। उन्होंने कभी नही कहा कि अपना परिवार, बच्चे, सभी कुछ त्याग दो। उन्होंने सदैव यह कहा कि साक्षी भाव से आनन्द लो। निर्लिप्सा

पूर्वक आनन्द लेने की बात लोगों की समझ में नहीं आती। लिप्त होकर आप कभी आनन्द नहीं ले सकते। किसी चीज़ से लिप्त होकर आप उसका पूर्ण आनन्द नहीं ले सकते। मान लो आप अपने बच्चे से लिप्त हैं तो हर वक्त आप उसके विषय में चिन्तित रहेंगे। तो बच्चा आनन्द न पा सकेगा। आप उसे घर से बाहर न जाने देंगे, लोगों से बातचीत न करने देंगे, सभी प्रकार के बन्धन उस पर लगाए रखेंगे। परन्तु यदि आपमें दिव्य विवेक है तो आप जान पाएंगे कि बच्चे को किससे बात करनी चाहिए, कहाँ जाना चाहिए, किस चीज का आनन्द लेना चाहिए और देखेंगे कि बच्चा अपने जीवन का आनन्द ले सके। किसी चीज़ के प्रति लिप्सा आपको उसकी पूरी समझ नहीं दे सकती। आप यदि निर्लिप्त है तो उससे ऊपर उठकर आप उसे देखते हैं साक्षी भाव में आप निर्विचार समाधि में चले जाते है। जैसा मैंने कहा यहाँ पर बहुत सुन्दर कालीन है। ये कालीन यदि मेरे होते तो लिप्त होने के कारण सम्भवत: मैं इन के प्रति चिन्तित होती। परन्तु यदि मैं लिप्त नहीं हूँ तो मैं इन्हें देखकर इनका आनन्द लूंगी। इन्हें बनाने वाले दस्तकारों की कारीगरी का मैं आनन्द लूंगी। बनाने वालों का आनन्द इनके माध्यम से मुझमें प्रतिबिम्बित होगा। अत: किसी चीज़ से लगाव प्रसन्नता तो हो सकती है परन्तु आनन्द नहीं क्योंकि आनन्द अद्वैत है और प्रसन्नता - अप्रसन्नता की जोड़ी है। प्रसन्नता में यदि हम आनन्द खोजें तो उसमें खामियाँ नज़र आएंगी परन्तु आनन्द सर्वव्यापी है, यह असीम है और व्यक्ति आनन्द के सागर में विलीन हो जाता है। यही कारण था कि श्री कृष्ण ने मर्यादाओं को सीमित कर दिया। आजकल हम देखते है कि बहुत सी मर्यादाएं व्यर्थ है उदाहरण के रूप में धर्म की मर्यादाएं। जब लोग इन मर्यादाओं में रहते है तो वे सीमित होकर एक ही से बन जाते है। मानो किसी खड़े हुए पानी के तालाब में पनपे हों। इन मर्यादाओं के कारण उनके मस्तिष्क बन्द हो जाते है। व्यक्ति सोचने लगता है कि मैं यह कार्य करूं या न करूं? मैं इसका आनन्द उठा पाऊंगा या नहीं? इन मर्यादाओं से आप आनन्द का वध करते है। बहुत से लोग सहजयोग में आना चाहते है। परन्तु अपने धर्म की रुग्ण मर्यादाओं के कारण वे नहीं आ सकते। वे सोचते है कि हमारा यही धर्म है, ये नहीं समझ पाते कि धर्म द्वारा बनाई गई मर्यादाएं वास्तव में क्या है? इस्लाम में, आप देख सकते है कि धर्म की मर्यादाओं के कारण वे अन्य देशों पर राज्य करना चाहते है, इसाई धर्म में भी ऐसा ही हो रहा है, हिन्दु धर्म के लोग भी अपनी सड़ी हुई मर्यादाओं के कारण पिस रहे है। उनमें विवेक बुद्धि का पूर्ण अभाव है। वे मर्यादाओं का पालन इसलिए किए चले जा रहे है क्यों कि ऐसा करने के लिए कहा गया था। इनके विषय में वे इतने धर्मान्ध है कि उचित अनुचित को भी नहीं देख पाते। परन्तु सहजयोग में आने के पश्चात् आप उन्हें देख सकते है उन पर हँस सकते है और अपने विवेक का उपयोग कर सकते है।

इसके अतिरिक्त सामाजिक मर्यादाएं हैं। कई बार इन्हें छोड़ने पर बहुत भयानक स्थिति हो जाती है। पश्चिमी देशों की महिलाएं सोचती है कि जितने कम कपड़े वे पहनेगी उतनी ही वे

सुन्दर लगेंगी। ये एक नई चीज़ उन्होंने आरम्भ कर दी है। ये मूर्खता है। इसके पीछे छिपे कारण को यदि हम खोजे तो ये अत्यन्त साधारण है कि हम पूर्व जन्मों में पशु थे और उन पाशविक संस्कारों के कारण अब भी हम वस्त्र नहीं पहनना चाहते। यह पाशविक परम्परा है जिसके कारण बहुत सी महिलाएं पूरे वस्त्र नही पहनना चाहती। यह पशु सम आचरण है। तो अच्छी मर्यादाओं को भी लोग त्याग देते है वे कहते है कि हम स्वच्छन्द है और जो चाहे कर सकते है। परन्तु इस स्वच्छन्दता से आपको क्या मिलता है? इस स्वच्छन्दता में आपकी पशु वृत्ति कार्य करती है और आप स्वयं को स्वतन्त्र व्यक्तित्व मान लेते है।

इसके अतिरिक्त राष्ट्र की मर्यादाएं है। परमात्मा ने भिन्न-भिन्न देश नही बनाए। यहाँ तो वैचित्रय है। बहुत प्रकार के लोग है, भिन्न प्रकार के स्थान है। इस वैचित्रय को कलात्मकता के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। हमें ऐसे विचारों से भ्रमित और नष्ट नहीं होना चाहिए कि हम अमरीकन है, हम भारतीय है, हम ये है, हम वो है। सहजयोग में आकर आप देख सकते हैं कि आप सब सहजयोगी है, किसी देश विशेष के नहीं है। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि आप लोग ये समझें कि यदि वास्तव में आप सभी राष्ट्रों का हित चाहते है तो कुछ कार्य करें-सहजयोग का कुछ कार्य। ताकि लोग भूमि आदि के लिए युद्ध करने के विचारों से मुक्त हो जाएं। भूमि तो परमात्मा की है। मनुष्यों की नहीं इसके लिए युद्ध करना मेरी समझ में नही आता। परन्तु लोग इस भ्रम में फँसकर अपने और अपने बच्चों के जीवन को नष्ट कर लेते है। बहुत से लोग नष्ट हो गए है और बहुत से पागलखानों में है। आपके पास अच्छे खासे घर होते है, भली भाँति आप रह रहे होते है और फिर शरणार्थी बन जाते है क्योंकि उन्हें लगता है कि वे अपनी भूमि के स्वामी बन सकते है। ये विचार उन्हें मूर्ख नेताओं से मिलते है जो भूमि विजय करने के लिए उन्हें युद्ध के लिए उकसाते है। भूमि आदि के लिए युद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं परन्तु स्थिति ऐसी है आप युद्ध किए बिना सत्य तक नहीं पहुँच सकते। आप यदि श्री कृष्ण का स्मरण करें तो उन्होंने अर्जुन से कहा था कि तुम्हें युद्ध करना होगा क्योंकि ये लोग अधर्मी है। युद्ध करके पाण्डवों ने कौरवों से अपना सब कुछ वापिस लिया। कौरवों ने क्योंकि धोखे से पाण्डवों से सब कुछ छीन लिया था इसीलिए श्री कृष्ण ने पाण्डवों को युद्ध करने के लिए कहा। अत: दिव्य विवेक यदि आज्ञा दे तो युद्ध उचित है। दासत्व के विरुद्ध भी युद्ध का औचित्य है। परन्तु भिन्न राष्ट्र या क्षेत्र बनाने के लिए युद्ध करना अनुचित है। किसी देश से कुछ हिस्से को अलग कर के अलग राज्य बना लेना गलत है। इससे बहुत सी समस्याएं पैदा होती हैं। अब हम तो विश्व धर्म और विश्व साम्राज्य में विश्वास करते है। हमें कुछ माँगना नहीं पड़ता। जहाँ भी आप जाते है आप वहाँ के नागरिक है। आप यदि रूस जाएंगे तो सभी रूसी सहजयोगी आपके साथ होंगे और यदि अमेरिका जाएंगे तो अमेरिका के सहजयोगी। भिन्न राज्यों और धर्मो के विचार मानव की देन हैं और यदि मानव परिवर्तित हो

जाएगा तो न तो युद्ध की समस्या रहेगी न भूमि हथियाने की।

श्री कृष्ण का दिव्य विवेक अब भी हमारे अन्दर है। यह हमारे विशुद्धि चक्र का अंग-प्रत्यंग है, विशुद्धि चक्र में ही श्री कृष्ण का निवास है। जब श्री कृष्ण आपके सहस्रार तक पहुँचते है तब वे विराट बन जाते है। अत: विराट का चक्र सिर में बनाया गया है-अगन्य चक्र के ऊपर। यह विराट श्री कृष्ण का ही रूप है जो अगन्य चक्र से ऊपर आए है। अगन्य चक्र से ऊपर उठकर आप विराट के अंग प्रत्यंग बन जाते है क्योंकि अहम् से ऊपर उठे बिना आप अपने स्वार्थो में और मर्यादाओं में फँसे रहते है। परन्तु आज्ञा से ऊपर उठकर विराट बनकर आप विराट की भूमि पर आ जाते है। विराट की शक्तियाँ महान होती है। विराट के दर्शन जैसे अर्जुन ने किए थे, विराट की शक्ति पूरे ब्रह्माण्ड में कार्य करती है। चाहे आप यहाँ बैठे हो यह शक्ति कहीं भी कार्य कर सकती है। आपने देखा होगा कि बहुत से लोग कहते है कि श्री माताजी यह चमत्कार है। मेरी माँ बीमार थी, वो यहाँ नही थी, मैंने प्रार्थना की और वो ठीक हो गई। ये सब विराट की शक्ति है। विराट की शक्ति मानव की सूक्ष्मता में भी इस प्रकार प्रवेश कर सकती है कि सभी कुछ इससे जुड़ जाता है हम अलग नहीं होते। जैसे पानी की बूँद समुद्र से जुड़ी होती है इसी प्रकार हम ब्रह्माण्ड से जुड़े हुए है। और जब आप विराट के नागरिक बन जाते है तब जिन भी चीज़ों से आप जुड़े हुए है उन्हें आपकी चैतन्य लहरियाँ प्राप्त होती है। आपके विचार, आपकी आकांक्षाएं, सभी कुछ इनमें से गुजरते है और यह कार्यान्वित होती है। आपने देखा है कि आपके जीवन में किस प्रकार चमत्कार हुए है। विराट शक्ति ही यह कार्य करती है।

**अब आपको ये जानना होगा कि विराट की पूजा किस प्रकार करें। सर्वप्रथम आपको अहम् से ऊपर उठना होगा। ये बहुत महत्वपूर्ण है इसके बिना कैसे आप पूजा कर सकते है? अहम् यदि विराट और आपके बीच खड़ा होगा तो किस प्रकार आप विराट के स्तर तक पहुँच सकते है। अहम् के बीच से आपको निकलना होगा और अहम् से ऊपर उठते ही आप विराट के साम्राज्य में पहुँच जाएंगे। वहाँ विराट ही महाराज है और आप उनकी प्रजा है जिसकी पूरी देखभाल विराट शक्ति कर रही है। उस स्थिति में आप सार्वभौमिक** (Universal) व्यक्ति बन जाते है। विश्व स्तर पर जो भी हमारी समस्याएं है वो अब आपसे जुड़ जाती है। मान लो कोई व्यक्ति उस बुलन्दी तक पहुँच गया है तो वह किसी अन्य देश में होने वाले युद्ध को भी रोक सकता है। किसी पर यदि जुल्म हो रहे है तो उसे भी बचा सकता है आपका करुणामय चित्त जहाँ भी जाएगा ये कार्य करेगा। कभी-कभी तो आप हैरान हो जाएंगे कि श्री माताजी यह किस प्रकार कार्य करता है। किस प्रकार सारी चीज़े घटित होती है यह संयोग बहुत बार हो चुके है आवश्यकता बस इतनी है कि अहम् से ऊपर उठकर आप विराट की अवस्था तक पहुँच जाएं। विराट में प्रवेश करना अत्यन्त आवश्यक है। तब आप

यह नहीं सोचते कि यह मेरा देश है, यह किसी और का। 'मेरा तेरा' समाप्त हो जाता है, आप विराट के अंग-प्रत्यंग बन जाते हैं और विराट आपको अपने उद्देश्य के लिए उपयोग करता है जब आपके पूर्ण विचार भिन्न हो जाते है, आपकी विचार धारा विश्वस्तरीय हो जाती है, तब यह कार्य करता है इसकी शक्तियाँ असंख्य है। जैसे श्री कृष्ण लोगों को बुलाने के लिए शंख का उपयोग करते है इसी प्रकार मैने अगुआओं को चेतना दी है। अब हमें घोष नाद करके लोगों को बुलाना है। परन्तु विराट के स्तर पर आपको ये सब नहीं करना पड़ता। विराट के स्तर पर जब आप होंगे तो लोग आपको देखेंगे और जान जाएंगे। वे सोचेंगे कि आप इतने मधुर मानव है, रत्नों की तरह से अच्छे, हर समय दैदीप्यमान। वे आपसे प्रभावित होंगे। ऐसा विराट के आशीर्वाद से होता है। जब आप वह स्थिति प्राप्त कर लेते है तो अपने उच्च पद, सम्पन्न परिवार तथा जीवन की अन्य मूर्खता-पूर्ण चीज़ों को भूल जाते है और ये सब चीज़ें समाप्त हो जाती है। लोगोंको अपने वैभव का प्रदर्शन करना अच्छा लगता है। कुछ लोग प्रदर्शन को अच्छा समझते है। परन्तु जो व्यक्ति अहम् से ऊपर उठकर विराट शक्ति का अंग प्रत्यंग बन गया है वह विराट के साम्राज्य में प्रवेश कर जाता है। वह जानता है कि वह अत्यन्त क्षुद्र है। विराट के सामने वह अत्यन्त तुच्छ है और उस शक्ति में वह विलीन हो जाता है। हम सबके साथ ऐसा होना चाहिए। हमें विनम्र होकर अपनी शक्तियों को जानना चाहिए। अपने अहम् से हमें मुक्ति पा लेनी चाहिए। अहम् से पूर्ण मुक्ति पाकर हमें वास्तव में वह स्थिति प्राप्त करनी चाहिए जिसमें हमें विराट शक्ति के नागरिक कहा जा सके।

परमात्मा आपको धन्य करे।

अब जब आप विराट के साम्राज्य में प्रवेश कर रहे है तो आपको शिशुसम होना पड़ेगा। वहाँ आप शिशु है। इस साम्राज्य में आप शिशुओं की तरह से प्रवेश करें। जैसा ईसा मसीह ने कहा, '' परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करते समय आपको शिशु सम होना पड़ेगा।'' आज आप सबको भी ऐसा ही करना है, बच्चों की तरह अबोध होना है-बच्चों की तरह से अबोध।